कांग्रेस दर्पण

#भारत जोड़ो यात्रा

CamScanner

भारत जोड़ो यात्रा

ग़रीबी, बेरोज़गारी, महंगाई और नफ़रत भाजपा ने कई हथियारों से भारत की जनता पर आक्रमण किया है। देश को एक दुर्घटना की दिशा में छोड़ दिया है। इसी दुर्घटना को रोकने की कोशिश है भारत जोड़ो यात्रा। पूरे भारत को एकजुट करना, प्रगति की दिशा में मोड़ना, साथ आवाज़ उठा कर, हाथ से हाथ मिला कर।

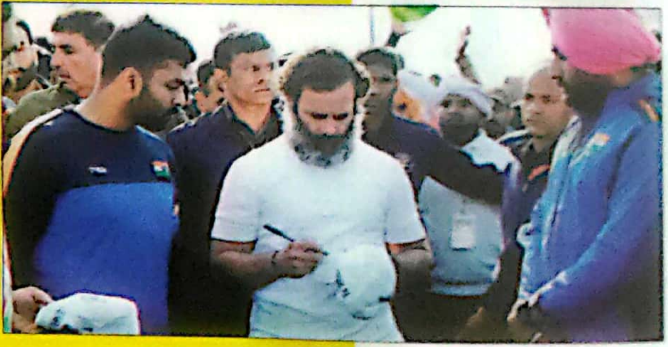

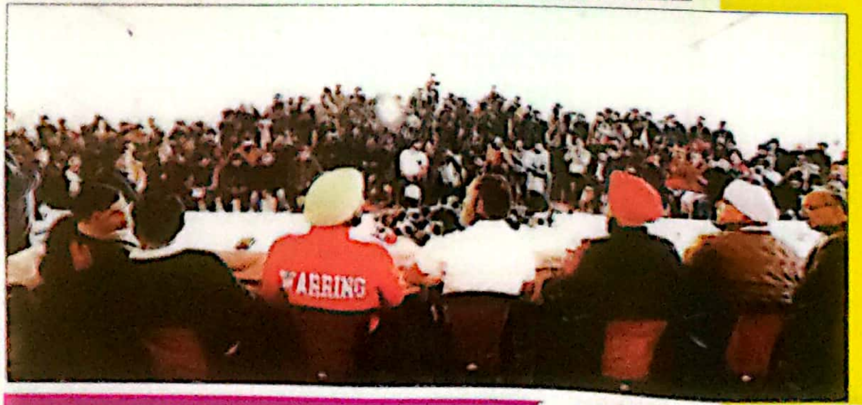

अंदर

09

बिहार में भारत जोड़ो यात्रा

10

मंदार पर्वत के मंथन से कांग्रेस के लिए अमृत रूपी कलश निकले अखिलेश ...

13

कर्मयोगी तपस्वी श्री राहुल गांधी जी

कांग्रेस दर्पण

संपादक

डॉक्टर संजय यादव
कांग्रेस कार्यकर्ता

कार्यकारी संपादक

शिशिर कौण्डिल्य
कांग्रेस कार्यकर्ता

सहायक संपादक

सन्नी आनंद उर्फ सुभाष
कांग्रेस कार्यकर्ता

राज छवि राज
कांग्रेस कार्यकर्ता

CS CamScanner

हमें देश के युवाओं को नए रास्ते दिखांने हैं : राहुल गांधी

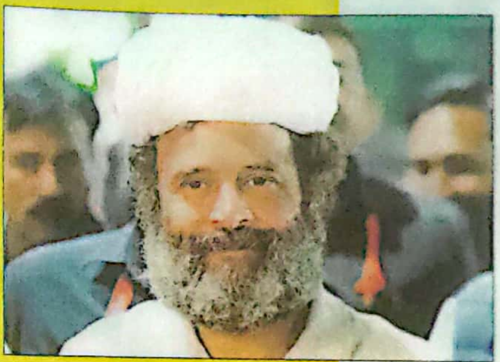

थारी पगड़ी सर–माथे राजस्थान...इ सकी लाज रखूंगा सदा।

आज नेताजी श्री राहुल गांधी जी के साथ हेलीकॉप्टर की उड़ने की प्रक्रिया को क़रीब से समझने पर इन बच्चियो के चेहरे का उत्साह देखने लायक था। हमें देश के युवाओं को नए रास्ते दिखाने है, उनकी क्षमताओ को सही दिशा देनी है – उनके बेहतर भविष्य के लिए, देश की तरक्की के लिए हमेशा अपने कर्तव्य के साथ इन्हे सही मार्ग दिखाना ही हमारा लक्ष्य है। ये सारी बाते श्री गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा के दौरान बच्चियो से उनके सपनो के बारे में पूछने पर बच्चियो ने हेलीकॉप्टर की उड़ने की प्रक्रिया को क़रीब से समझने और देखने की अपने सपनो के बारे मे बताया। इन बच्चियो के चेहरे का उत्साह देखने लायक था।

मलाखेरा की जनता भी भारत जोड़ो यात्रा में भाग लेकर देश में नफरत वाले ताकतों को जवाब देगी

CamScanner

एक बूथ ग्यारह यूथ

- डॉ संजय यादव

संपादक

पिछले कुछ सालो से ऐसा देखा जा रहा है कि वर्तमान का सत्ताधारी दल और उनके द्वारा नियुक्त पंत प्रधान देश की व्यवस्था को सुदृढ़ करने के बजाय 24 घंटे चुनावी मोड मे ही रहते है। सत्ता मे रहते इनके द्वारा तरह तरह के प्रयोग किए जाते रहे है। कहने को तो ये हिदूवादी है, लेकिन इनके हिदूवादी चेहरे के पीछे इनकी जातिवादी सोच और उसका छिप कर चोरी से प्रयोग, कई बार देशवासियो को संशय मे डाल देता है कि यह क्या!!? लेकिन इनके द्वारा किए जा रहे भावनाओ के व्यापार मे इनकी साजिश को लोग समझ पाते , तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। और इनकी यही साजिश लोकसभा और विधानसभा से होते हुए आखिरकार बूथ तक पहुंच जाती है। इसके कई उदाहरण हमलोगो के सामने है। मसलन, पन्ना प्रयोग, सप्तऋषि आदि आदि।

यह सब उनके ऐसे जातिवादी कोड वर्ड्स है जो कि आम लोगो के जेहन मे आ ही नही पाता। और जब तक आ पाता तब तक चुनाव पार। लिहाजा , उनकी इसी साजिश को नाकाम करने के लिए कांग्रेस पार्टी को हर बूथ पर पढ़ा लिखा और मजबूत ग्यारह यूथ को खड़ा करना है। दरअसल, कांग्रेस दर्पण उनके इन्ही जातिवादी कोडवर्ड्स का पर्दाफाश करेगा और हर एक बूथ पर एक सशक्त और मजबूत युथ की टीम को खड़ा करने का अभियान चलाने के लिए अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेगा। कांग्रेस पार्टी के पक्ष मे काम करने वाला और हर एक बूथ पर तैनात रहने वाला एक ऐसा युथ जो की लोगो के सामने उनके छद्म हिंदूवादी वेश के पीछे घोर जातिवादी चेहरे को उजागर कर सके। और यह कांग्रेस दर्पण के सूचना तंत्र से ही संभव हो पायेगा। क्योकि वैसे भी कहा जाता है कि विश्व का सबसे मजबूत आदमी वह होता है , जिनके पास अधिक से अधिक सूचना हो। और वर्तमान की गोदी मीडिया की सूचना से तो आप सब भली भांति परिचित ही है।

बहरहाल, इसी संकल्प के साथ आपके समक्ष कांग्रेस दर्पण का प्रथम संस्करण समर्पित है।। आशा करेगे कि आप सभी पार्टी के सिपाहियो का प्यार और दुलार इसे निरंतर प्राप्त होता रहेगा।

- जय हिन्द

CamScanner

जहां वीरता और बलिदान एक परंपरा है, वह है वो पंजाब की भूमि। कल, वीर चक्रविजेता मेजर जनरल श्योनन सिंह यात्रा में शामिल हुए – उसी अन्याय के विरुद्ध और सच के साथ खड़े होने जिस परंपरा के मार्गदर्शक उनके चाचा शहीद-ए-आजम सरदार भगत सिंह थे।

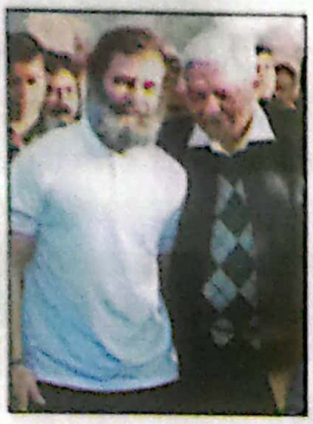

आज, मरघट हनुमान मंदिर में दर्शन प्राप्त कर यात्रा का शुभारंभ किया। बल, बुद्धि और विद्या के दाता हनुमान जी हर भारत यात्री का पथ प्रदर्शित करें और यात्रा को उसके गंतव्य तक पहुंचने की शक्ति दें, यही आशा करता हूं।

भारत के रक्षा मंत्री व उत्तर प्रदेश के तीन बार मुख्यमंत्री रहे, समाजवादी पार्टी के संस्थापक, आदरणीय मुलायम सिंह यादव जी के निधन का समाचार हृदयविदारक है। समस्त कांग्रेस परिवार की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। इस दुःख की घड़ी में मैं श्री अखिलेश यादव और उनके परिवार के साथ हूं।

न द्वेष, न चिढ़, न क्रोध – किसी भी भारत यात्री के दिल में इनमें से कुछ भी नहीं है। कुछ है तो भारत जोड़ने का जज़्बा, भारतीयों की समस्याओं के लिए संवेदना और सभी देशवासियों के लिए प्यार। नफ़रत, महंगाई और बेरोज़गारी – क्या इनमें कहीं भी देशहित है? क्या इससे किसी भी आम इंसान का भला होगा? नहीं, बिल्कुल भी नहीं। आवाज़ उठाओ, पूरे ज़ोर से उठाओ, मगर भारत की समस्याओं के खिलाफ़, भारतवासियों के कल्याण के लिए। और इस मुहिम में योगदान देने के लिए, भारत जोड़ो यात्रा में आप सभी आमंत्रित हैं। देश के ज़िम्मेदार नागरिक की तरह, आपका पहला कर्तव्य हिंदुस्तान की प्रगति और उन्नति है।

श्री सुखविंदर सिंह सुक्खु को हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री और श्री मुकेश अग्निहोत्री को उप मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने पर हार्दिक बधाई। सभी कांग्रेस कार्यकर्ताओं और समस्त प्रदेशवासियों को इस नई शुरुआत के लिए शुभकामनाएं। कांग्रेस सरकार अपने सभी वादे पूरे करने के लिए प्रतिबद्ध है।

गंगा – जमुनी तहज़ीब की जन्मभूमि, जिसका इतिहास और बलिदान उसकी देशभक्ति का प्रमाण है, और जो क्रांति की नई मिसाल कायम करने में सक्षम है – उत्तरप्रदेश की पावन धरती को मेरा प्रणाम।

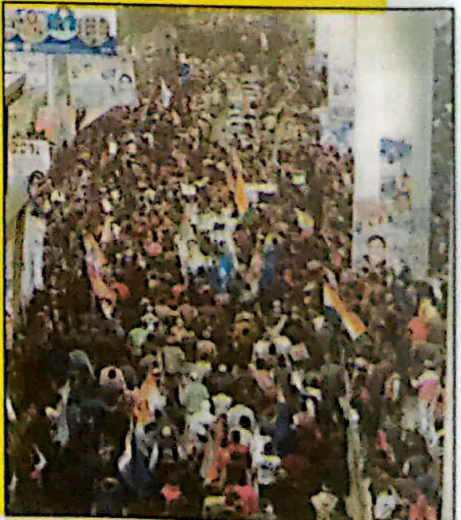

सामाजिक, समरसता, त्याग और बलिदान की पार्टी कांग्रेस

-डॉक्टर चंद्रिका प्रसाद यादव
सदस्य ,पॉलिटिकल अफेयर कमिटी

कांग्रेस का सेवा, संघर्ष और बलिदान का गौरवशाली इतिहास रहा है- देश की जनता की सेवा का इतिहास, देश को आजादी दिलाने का इतिहास और देश के 'नवनिर्माण' का इतिहास। 28 दिसंबर, 1885 को श्री एओ ह्यूम की पहल पर देश के विभिन्न प्रांतों से राजनीतिक और सामाजिक विचारधाराओं के लोग मुंबई के गोकुलदास संस्कृत कॉलेज मैदान में एक मंच पर एकत्रित हुए। यह राजनीतिक एकता एक संगठन में परिवर्तित हो गई, जिसका नाम 'कांग्रेस' रखा गया।

श्री डब्ल्यू सी बनर्जी कांग्रेस के पहले अध्यक्ष बने। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने देश में सामाजिक समरसता का नया वातावरण बनाने पर जोर दिया।

कांग्रेस को महात्मा गांधी जैसे महान व्यक्तित्व का भी नेतृत्व मिला। सत्याग्रह और जन आंदोलन के माध्यम से, महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन को लोगों के विचारों में भर दिया। महात्मा गांधी ने अहिंसा, अंतर्धार्मिक समानता और रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से सामाजिक क्रांति की शुरुआत की। उनके नेतृत्व में न केवल स्वतंत्रता आंदोलन अपने निर्णायक चरण में पहुंचा, बल्कि कांग्रेस को व्यापक जनाधार भी प्राप्त हुआ।

"स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे" बाल गंगाधर तिलक द्वारा दिए गए इस नारे ने सोते हुए देश के लोगों को झकझोर कर रख दिया। "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा" के नारे ने भारत की युवा पीढ़ी को आंदोलित कर दिया और भारत के लोगों ने "करो या मरो" और "अंग्रेजो भारत छोड़ो" के आह्वान पर अपना तन, मन और जीवन कुर्बान कर दिया। 1977-78 के दौरान कांग्रेस के कई बड़े दिग्गज इंदिरा जी का साथ छोड़कर सत्ताधारी जनता पार्टी में शामिल हो गए थे, लेकिन मेरे जैसे कई आम कार्यकर्ताओं का विश्वास इंदिरा जी पर टिका हुआ था।

2 जनवरी 1978 को इतिहास ने खुद को दोहराया और कांग्रेस फिर से विभाजित हो गई। लेकिन श्रीमती इंदिरा गांधी ने दूरदर्शितापूर्ण कदम उठाते हुए एक नई पार्टी (कांग्रेस-प्रथम) का गठन किया और देश की जनता ने कांग्रेस-प्रथम को ही असली कांग्रेस मानकर इंदिरा जी के नेतृत्व में विश्वास जताया। उन्होंने कांग्रेस को आम लोगो की आशाओं-आकांक्षाओं से जोड़कर

पार्टी को एक नई ताकत दी। कांग्रेस संगठन को समर्थ और शक्तिशाली बनाया। उनकी प्राणों की आहुति भी देश की एकता और अखंडता के लिए हुई।

श्रीमती गांधी के बाद श्री राजीव गांधी ने कांग्रेस का नेतृत्व संभाला। इंदिरा गांधी और राजीव गांधी भारत के समग्र विकास के प्रति संकल्पित राजनेता थे। भारत का विकास उनका एकमात्र एजेंडा था और एक विकसित आधुनिक भारत वह था जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। दुर्भाग्य से, कुछ समय बाद, उनकी भी असामयिक मृत्यु हो गई।

श्रीमती सोनिया गांधी ने राजीव जी के अधूरे सपनो को पूरा करने का बीड़ा उठाया तथा इंदिरा जी और राजीव जी की शहादत और देश सेवा की विरासत को बचाने का संकल्प लिया। श्रीमती सोनिया गांधी के प्रभाव के कारण 2004 में कांग्रेस केंद्रीय सत्ता में लौट आई। सोनिया गांधी का असाधारण व्यक्तित्व और कांग्रेस के असंख्य कार्यकर्ताओं की मेहनत ने पार्टी को सत्ता के शिखर पर पहुंचाया। श्रीमति सोनिया गांधी ने अपनी अंतरात्मा की आवाज पर प्रधानमंत्री का पद त्याग कर भारतीय राजनीति में एक अनूठी मिसाल पेश की और प्रधानमंत्री पद का दायित्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह को उन्होंने अपने हाथो से सौंपा ।

कांग्रेस के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार ने देश के आम लोगों के कल्याण के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं बनाईं। जिसमे 'सूचना का अधिकार' कानून, बच्चो के लिए 'शिक्षा की गारंटी अधिनियम', 'मध्याह्न भोजन योजना', 'महात्मा गांधी नरेगा अधिनियम' (मनरेगा), 'राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन', 'राजीव गांधी ग्रामीण विद्युतीकरण योजना' और 'खाद्य सुरक्षा अधिनियम' आदि महत्वपूर्ण है। देश के किसानो का करीब 72 हजार करोड़ रुपये का कर्ज माफ किया गया और किसानो की उपज का एमएसपी मूल्य भी बढ़ाया गया।

केंद्र में जब-जब गैर-कांग्रेसी सरकारे आई है, देश की अर्थव्यवस्था चरमरा गई है, नस्लवादी, अवसरवादी और सांप्रदायिक गठजोड़ मजबूत हुए है। धर्मनिरपेक्षता के नैतिक मूल्यो को चोट पहुंचाई गई है और गरीबो, कमजोर वर्गों और अल्पसंख्यको का कल्याण नही किया गया है अपितु उनका दमन हुआ।

स्वतंत्रता की 75वी वर्षगांठ पर कांग्रेस ने देश के वर्तमान हालात पर विचार करने के लिए उदयपुर मे 'नव संकल्प शिविर' का आयोजन किया. इस शिविर मे, कांग्रेस पार्टी ने देश को विभाजित करने वाले आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक मुद्दो के खिलाफ एक जन जागरूकता अभियान शुरू करने का निर्णय लिया। परिणामस्वरूप, श्री राहुल गांधी के नेतृत्व मे कश्मीर से कन्याकुमारी तक 3500 किलोमीटर लंबी 'भारत जोड़ो यात्रा' शुरू हुई।

श्री राहुल गांधी के द्वारा 'भारत जोड़ो यात्रा' के माध्यम से महात्मा गांधी द्वारा दिखाए गए मार्ग का अनुसरण किया गया है। श्री राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' महात्मा गांधी की 'दांडी यात्रा', संत विनोबा भावे की 'भूदान यात्रा', श्रीमती इंदिरा गांधी की गरीबी हटाओ यात्रा' और स्व. श्री राजीव गांधी की "सद्भावना यात्रा' की याद दिलाती है। श्री राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' हमे याद दिलाती है कि कांग्रेस का मार्ग एक होना है, सबको साथ लेकर चलना है, सबके सुख-दुख मे समान रूप से सहभागी बनना है।

श्री राहुल गांधी की 'भारत जोड़ो यात्रा' ने कांग्रेस मे नई ऊर्जा का संचार किया है, इसके कारण कांग्रेस कार्यकर्ताओ का मनोबल भी बढ़ा हुआ है। कांग्रेस को अपने स्थापना दिवस के अवसर पर अपने गौरवशाली अतीत का अवलोकन, नए वर्तमान मे आत्मचिंतन और उज्ज्वल भविष्य का चिंतन करना चाहिए। समय की मांग है कि बदली हुई राजनीतिक परिस्थितियो मे कांग्रेस संगठन के अनुभवी नेताओ और ऊर्जावान युवा नेताओ के साथ समन्वय स्थापित कर काम किया जाय।

यहां न तो जाति का भेद हो और न ही धर्म का।। यही हमारा असली चरित्र है और यही हमारी मूल पहचान भी है।

CS CamScanner

मंदार पर्वत के मंथन से कांग्रेस के लिए अमृत रूपी कलश निकले अखिलेश

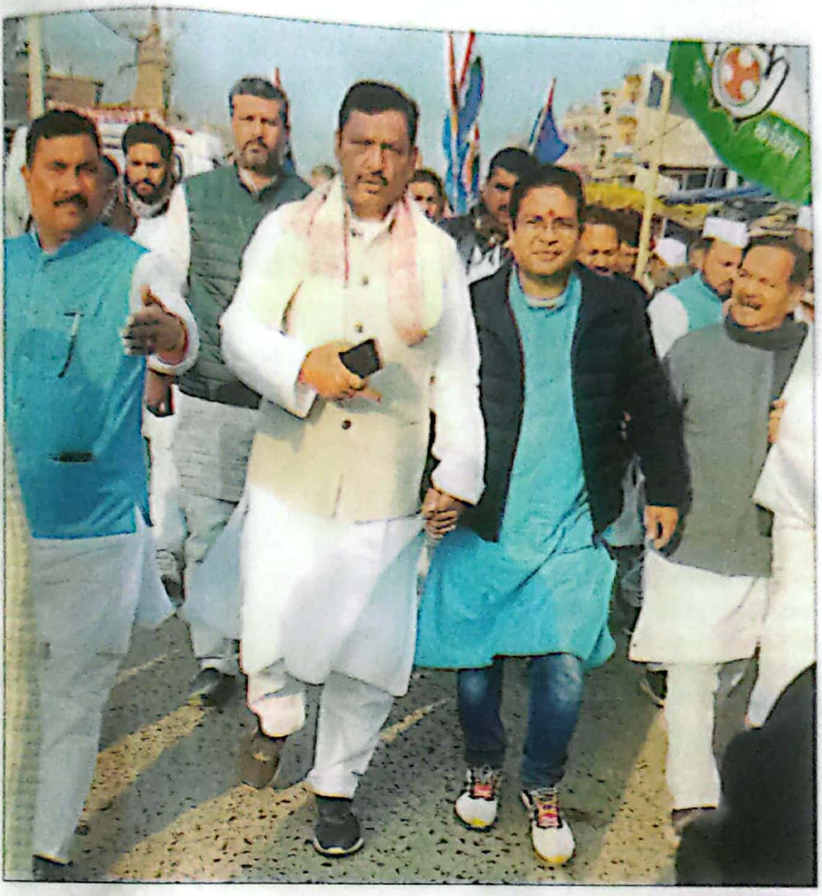

जिस प्रकार समुद्र के मंथन से देवताओ को अमृत की प्राप्ति हुई थी। ठीक उसी प्रकार मंदार पर्वत पर कांग्रेस के मंथन से अमृत रूपी कलश के रूप मे निकले बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद डॉक्टर अखिलेश प्रसाद सिंह। ऐसा लगता है मानो अब बिहार मे कांग्रेस पार्टी के दिन बहुरने वाले है। क्योंकि अब एक सशक्त व्यक्तित्व के हाथ मे इस अभियान की कमान है।

इसकी बानगी तो भारत जोड़ो यात्रा मे ही दिखने लगी है। लेकिन अभी तो अभियान की यह केवल शुरुआत मात्र है। अभी तो जिला से लेकर ब्लॉक और फिर पंचायत से लेकर एक एक बूथ तक इस अभियान को पहुंचना है। जाहिर है कि जब नेतृत्व सशक्त होगा तो फिर अभियान का निर्णायक होना तो लाजमी ही है। लिहाजा, अब कांग्रेस कार्यकर्ताओ ने कमर कस ली है कि इस अभियान को जिला और ब्लॉक से लेकर पंचायत और बूथ तक मजबूती के साथ पहुंचा देना है। बूथ के हर एक युथ को विचारो से इतना मजबूत कर देना है कि वो फिर इस बात को अंदर तक समझ ले कि झूठ को हराना है और देश को जीतना है। और ये तभी ही संभव हो पायेगा, जब कांग्रेस पार्टी के हाथो को मजबूत किया जाएगा। अखिलेश बाबू के बागडोर संभालते ही पार्टी मे एक गजब की लहर देखी जा रही है। मसलन, कि जिला से लेकर ब्लॉक तक के कांग्रेस कार्यकर्ताओ मे एक उत्साह के वातावरण का निर्माण हुआ है। सबमे अपने नेता के प्रति एक उम्मीद दिख रही है। उम्मीद जिम्मेदारी का, उम्मीद जीत की और उम्मीद मजबूती की। साथ ही इसकी भी उम्मीद कि अब निर्णायक स्थिति मे मुकाम को पहुंचा देना है। इसलिए उत्साहित कार्यकर्ता अब मोर्चा संभालने को तैयार है। कार्यकर्ताओ मे जोश और जुनून है कि लड़ेगे और विजय का पताखा फहराएंगे। लेकिन वो तभी ही संभव है जब पार्टी को एक एक बूथ तक काम करना होगा। इसके लिए प्रदेश से लेकर जिला और फिर ब्लॉक तक के पदाधिकारियो को ताकत लगानी होगी। एक समन्वय बैठाना होगा। योजना बनानी होगी और फिर उसे मूर्त रुप प्रदान करना होगा। कहते है न कि एक सशक्त नेतृत्व से ही सशक्त संगठन और फिर सशक्त देश का निर्माण होता है। लिहाजा, डॉक्टर अखिलेश प्रसाद सिंह जी के रूप मे पार्टी को एक सशक्त नेतृत्व मिल चुका है। मसलन, कि अब कांग्रेस पार्टी और संगठन का भी सशक्त होना तय है और फिर अपने राज्य के परचम का भी लहराना निश्चित है। इसलिए अब समय आ गया है कि कांग्रेस पार्टी के सभी कार्यकर्ता मजबूती के साथ तैयार हो जाए।

वक्त आ चुका है।
लड़ेगे, करेंगे, और जीतेगे।।

-बंटी चौधरी, पूर्व विधायक , सिकंदरा

भारत जोड़ो यात्रा

एक बड़े आंदोलन की दहलीज पर खड़ा होता देश

कि

किसके बंदूक पर सर रखे, बता दो हमें।
रोजगार मांगना अगर गुनाह है, तो सजा दो हमें।।

जब देश की संवैधानिक संस्थाएं ध्वस्त होने लगे। जब देश में झूठ पर तालियां बटोरी जाने लगे। जब देश में रोटी के लिए संघर्ष शुरू हो जाय, और जब देश के लोग झूठ, फरेब और धोखे की विसात पर बिछी व्यवस्था में खुद को असहाय महसूस करने लगे। तो समझिए कि देश एक बहुत बड़े #आंदोलन की दहलीज पर खड़ा हो गया है।

अब ज़रा इसको ऐसे समझने की कोशिश कीजिए....

वर्ष 2019 के आम चुनाव से ठीक पहले यानि कि मार्च 2019 में रेलवे भर्ती बोर्ड ने अलग अलग पदो हेतु लगभग 90,000 सीट के लिए वैकेंसी निकाली। उससे ठीक पहले वर्ष 2018 में भी रेलवे ने बड़े पैमाने पर वैकेंसी निकाली थी। लेकिन उसकी भी परीक्षा नही ली गई। और एक बार फिर से 2019 में चुनावी लाभ लेने के मद्देनजर रेलवे ने वैकेंसी निकाली।

करीब 90,000 की वैकेंसी के एवज मे लगभग तीन करोड़ छात्रों ने फार्म भरा। फॉर्म भरने वाले सभी छात्रों से 500 रुपए प्रति छात्र शुल्क वसूले गए। जिसकी कुल राशि बनती है लगभग 1500 करोड़ रुपए। अब जब परीक्षा लेने की बात आई तो रेलवे बोर्ड ने हाथ खड़े कर दिए, और हवाला दिया कि हमारे पास वेंडर्स की उपलब्धता नही है। जिससे कि हम इतने बड़े पैमाने पर परीक्षा की व्यवस्था करा सकें।

अब ज़रा सोचिए कि रेलवे ने छात्रो से परीक्षा के नाम पर करोड़ो रुपए वसूले लेकिन उनके पास परीक्षा लेने की व्यवस्था ही नही है। बात यही आकर नही रुकती.... 2014 के चुनावी भाषणो पर अगर गौर किया जाए तो हर वर्ष तकरीबन दो करोड़ लोगो को रोजगार देने के वादे उन चुनावी भाषणो मे किए गए थे।

लेकिन सरकारी आंकड़ो पर अगर नजर डाले तो जिस #ssc में हर वर्ष लगभग 14 हजार वैकेंसी निकलती थी, वहां आज के दौर में वैकेंसी घटकर 6 हजार से भी कम रह गई है।

जिस #आईबीपीएस (इंडियन बैंक्स पर्सनल सिलेक्शन) के माध्यम से साल में लगभग 21 हजार तक की वैकेंसी निकलती थी। वो आज केवल 12 सौ के आस पास रह गई है। #रेलवे का हाल तो आप देख ही रहे हैं।

ये तो हुई केंद्र की बात।

इधर, राज्य स्तर की संस्थाएं भी कोई कम नही है। #दारोगा, #सिपाही, #टीचर, #सहायक एवम् अन्य पदो पर भर्तियो के तमाशे कैसे है ? ये किसी से छुपा नही है।।हालात तो ऐसे हैं कि पहली का रिजल्ट नही आया, वही दूसरी की परीक्षा नही ली गई। जबकि तीसरे की वैकेंसी भी आ गई। और तो और कही रिजल्ट्स मे सेटिंग। तो कही रिजल्ट्स मे गड़बड़ी। ये सब बहुत ही आम है। लेकिन इसके लिए अर्जी सुनने की गुंजाइश बिल्कुल भी नही है। ऐसे मे तैयारी करने वाले छात्रों की व्यक्तिगत मनः स्थिति के बारे मे जरा अंदाज़ा लगाइए।

ज़रा समझिए कि वर्ष 2019 के लोक सभा चुनाव मे लगभग मे 55 करोड़ लोगो ने भाग लिया था। जिसकी पूरी व्यवस्था सरकार और आयोग के द्वारा वमुस्तैदी की गई थी। लेकिन तीन करोड़ छात्रो की परीक्षा की व्यवस्था इस देश मे नही हो सकती। हर वर्ष लगभग 2 करोड़ लोगो को रोजगार देने का वादा किया गया था। लेकिन विभिन्न मीडिया माध्यमो से आए आंकड़ो पर अगर नजर डाले तो पिछले छः महीने मे इस देश मे तकरीबन 17 करोड़ लोग बेरोजगार हो चुके हैं। और सरकारी वैकेंसी पर कैंची चली ,सो तो अलग। हालात तो इस कदर बिगड़ चुके है कि इस देश मे असंगठित कामगार क्षेत्र, जो कि देश मे 90 फीसदी रोजगारो का सृजन करती है। लगभग बर्बाद हो चुकी है। लोग रोटी मांग रहे है लेकिन उन्हे लाठी मिल रही है। छात्र परीक्षा लेने की बात कर रहे है तो उन्हे एक देश एक परीक्षा का पाठ पढ़ाया जा रहा है। लोग बेरोजगारी की दुहाई दे रहे है। रिजल्ट्स मे धांधली का आरोप लगा रहे है। लेकिन उन्हे सलाखो के पीछे डाला जा रहा है। अब आखिर फरियाद कहा सुनाई जाय ? किसके समक्ष दुहाई की भीख मांगी जाय ? ऐसे मे देश मे आंदोलन का तांडव नही होगा तो क्या बांसुरी बजाई जाएगी ? ? वैसे भी कहा गया है कि

जिस दिन इस देश की सड़कें सुनी हो जाएगी,
उसी दिन से ये संसद आवारा हो जाएगा।

लेकिन आज संसद की कौन कहे जनाब ? इस देश की पूरी की पूरी संवैधानिक व्यवस्था ही आवारा हो चुकी है।

हालात तो इस कदर हो चले है कि --
रोजी रोटी, हक की बाते जो जुबान पर लाएगा।
कोई भी हो निश्चित ही वह एक देश द्रोही कहलाएगा।।
उसे सलाखो के पीछे डाला जाएगा।।।

शिशिर कौण्डिल्य

वरिष्ठ पत्रकार व कांग्रेस नेता

CS CamScanner

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एक नजर और नजरिया

गौरव गोस्वामी

अगर हम अतीत के झरोखो से भारत को झांकने का प्रयास करे करे तो इसका स्वर्णिम इतिहास राजनीतिक संस्कृति एवं आर्थिक रूप से काफी समृद्ध रहा है। लेकिन भारत की इसी सांस्कृतिक एवं आर्थिक संस्कृतियो ने विदेशियो को अपनी ओर आकृष्ट किया एवं यहां की संपदा पर बूरी नजर उनकी पड़ गई, प्राचीन काल से ही भारत पर शको, कुषाण, पार्थियानो हूणो का आक्रमण होता रहा, लेकिन वे यहां की समृद्ध संस्कृति के आगे नतमस्तक हो गए, इसी क्रम मे जब भारत की राजनीतिक सत्ता कमजोर हुई तो मुसलमानो का आक्रमण शुरू हुआ। शुरू के दिनो मे एक लुटेरो की भांति भारत पर बार बार आक्रमण करते रहे और यहां की संपदा को लूटते खसोटते रहे, लेकिन अंतिम रूप से उन्होने अपनी बदहाली को दूर करने का एकमात्र उपाय भारत मे बसना ही निकाला। धीरे-धीरे वे यहां की मिट्टी मे रचते बस्ते चले गए और अपने साथ लाए कुछ हुनर से भारतीय संस्कृति को भी समृद्ध किया।

लेकिन अंततः आपस की फूट और भारत की समृद्धि ने अंग्रेजो का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। भारत की कमजोर होती राजनैतिक और तकनीकी संपत्ति ने अंग्रेजो को भारत मे पांव पसारने का मौका दिया। अंग्रेजो ने अपनी धन लिप्सा और साम्राज्यवादी भूख के कारण भारत की भूमि पे कब्जा करते चले गए। धीरे-धीरे यहां की संपदा संस्कृति और भाईचारे को नष्ट करने मे लगे ऐसी स्थिति मे भारतीयो मे जबरदस्त असंतोष फैलने लगा, भारत के कोने कोने से अंग्रेजो का विरोध शुरू हो गया हालांकि यह विरोध पूर्णतया संगठित नही था, इसके बावजूद किसानो, आदिवासियो, सन्यासियो एवं जमीदारो के द्वारा लगातार विरोध किया जाने लगा। कई राजनीतिक सामाजिक संगठनो का निर्माण किया गया और प्रायोजित तरीके से अंग्रेजो का विरोध शुरू हुआ।

हालांकि यह विरोध प्रयास्त और अखिल भारतीय नही था। ऐसी स्थिति मे संपूर्ण भारत जनमानस को एक अखिल भारतीय राजनीति के संगठन की आवश्यकता महसूस की गई। इन्ही परिस्थितियो मे कई अंतर्विरोधो के साथ 28 दिसंबर 1885 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अपने स्थापना काल से ही अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा को मूर्त रूप देने का निरंतर प्रयास किया। यह इस बात से पता चलता है कि कांग्रेस के राष्ट्रीय अधिवेशन देश के कोने कोने मे होने लगे।

अधिवेशन का अध्यक्ष क्षेत्र का व्यक्ति नही होता था बल्कि वह भारत के अन्य क्षेत्रो के राजनैतिक एवं वैचारिक रूप से लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति हुआ करते थे, हालांकि अंग्रेजो ने इस संस्था को स्थापित करने मे अपनी रुचि भी दिखलाई थी, कि यह हमारे लिए सेफ्टी वॉल्व (अभय कपाट) के रूप मे करेगी।

लेकिन लाला लाजपत राय के विचारो मे यह संस्था तड़ित चालक के रूप मे स्वयं को स्थापित किया। धीरे-धीरे इसके विचार क्रांतिकारी होते गए और तत्काल कई गवर्नर जनरल के कोपभाजन होना पड़ा।

अगर हम कांग्रेस के संपूर्ण क्रियाकलापो का अध्ययन करना चाहेंगे तो इसे हम तीन चरणो मे विभाजित करके देख सकते है। कांग्रेस का प्रथम चरण उदारवादी राजनीति और संयम का रहा। तत्कालीन नेताओ ने दादा भाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, दिनीशा वाचा, व्योमेश चंद्र बनर्जी का नाम उल्लेखनीय है।

इन लोगो ने राजनीति से धर्म और जाति को दूर रखने का प्रयास किया। मानवतावाद कानून के समक्ष समानता, नागरिक स्वतंत्रता एवं प्रतिनिधि संस्थाओ को विकास का भरपूर प्रयास किया। उस समय भारत का मध्य वर्ग कांग्रेस के तरफ बड़ी आशावादी नजरो से देख रहा था, जिस पर कांग्रेस ने खरा उतरने का प्रयास किया हालांकि अंग्रेजो की न्यायप्रीता एवं उनके प्रति राज भक्ति मे कांग्रेस ने कोई कमी नही की इसके बावजूद भारत की आर्थिक बदहाली शोषण और अत्याचार से उन्हें अवगत कराने मे भी पीछे नही रही। इन लोगो ने विधान परिषदो का विस्तार जनपद सेवाओ में भारतीयो की भर्ती एवं भारत में परीक्षा की भी मांग इनके द्वारा किया जाता रहा। इसी बीच अंग्रेजी सरकार ने फूट डालो राज करो की नीति अपनाते हुए सर सैयद अहमद खां, बनारस के राजा शिवप्रसाद सिंह के माध्यम से कांग्रेस को कमजोर करने का भरपूर प्रयास की लॉर्ड कर्जन ने यह तक कह दिया कि कांग्रेस पतन की ओर लड़खड़ा रही है, और हम उसकी शांतिमय मृत्यु मे सहायता करना चाहते हैं। लेकिन इसी बीच कांग्रेस की प्रार्थना याचना और प्रतिवाद की नीतियो के विरुद्ध कांग्रेस मे एक क्रुद्ध तरुण लोगो का अभ्युदय हुआ जो कांग्रेस का उद्देश्य स्वराज चाहते थे जिस आत्मविश्वास और निर्भरता से प्राप्त किया जा सके। इन तरुण क्रुद्ध लोगो की प्रकाश पुंज के रूप मे बाल गंगाधर तिलक के विचारो एवं नेतृत्व ने एक नई दिशा और प्रेरणा दी। पुराने नेता प्रसांगिक होते चले गए और नई पीढ़ी ने अपने आक्रोश से संपूर्ण अंग्रेजी साम्राज्य को झकझोर ने का प्रयास किया। असंतोष इस कदर बढ़ता चला गया की बंगाल और महाराष्ट्र मे युवाओ ने बम और पिस्तौल का सहारा लिया और श्री कृष्ण को वीर योद्धा, चतुर नीतिज्ञ, और सफल साम्राज्य निर्माता के रूप मे अपना आदर्श माना। इस कालखंड मे बाल लाल पाल की तिकड़ी ने जनमानस मे एक नई चेतना पैदा की, तिलक ने गणेश उत्सव, शिवाजी उत्सव के माध्यम से भारत मे वैदिक सभ्यता संस्कृति दर्शन एवं धर्म को प्रेरणा का मूल स्रोत मानते हुए बलिदान के लिए प्रेरित किया और भारत भारतीयो के लिए नारा बुलंद किया। इसी नारे के साथ कांग्रेस का जनाधार विकसित होता चला गया, कांग्रेस जनता से जुड़ती चली गई और एक एसे दल के रूप मे स्वयं को स्थापित की वह भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रार्याय बन गई।

आगे कांग्रेस ने गांधी के नेतृत्व मे कई जन आंदोलन के माध्यम से अंग्रेजी साम्राज्य को समूल नष्ट कर भारत को एक गणतंत्र के रूप मे स्थापित होने का मौका प्रदान किया, जो पंडित जवाहरलाल नेहरू के कुशल एवं दूरदर्शी नेतृत्व में चौमुखी विकास करते हुए विश्व के मानचित्र पर समृद्ध एवं शक्तिशाली देश के रूप मे अपने आप को स्थापित किया।

नेहरू के उत्तराधिकारीयो एवं कांग्रेस संगठन सिपाहियो के द्वारा संपूर्ण भारत को सांस्कृतिक समृद्धि के साथ राजनीतिक रूप से एकजुट करने में जो महती सफलता पाई, उसे पुनः जाति और धर्म के नाम पर कुत्सित प्रयास करते हुए फूट डालकर राज करने की नीति अपनाई जा रही थी। आजादी के बाद स्थापित संवैधानिक संस्थाओ, समाजवादी अर्थव्यवस्था एवं समभाव वाली सामाजिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर जो कुकृत्य किया जा रहा है उसका प्रतिवाद करने के लिए राहुल गांधी के नेतृत्व मे कन्याकुमारी से कश्मीर तक अद्भुत एवं अदम्य साहस के साथ भारत को जोड़ने की जो यात्रा चली है उसे हर भारतीयो का समर्थन प्राप्त होता दिख रहा है। इससे आशा जगती है कि भारत मे पुनः कांग्रेस के नेतृत्व मे एक ऐसी सरकार बनेगी जिसमें सबकी भागीदारी सुनिश्चित होगी।

इसी बीच कांग्रेस के सर्वोपरि नेता राहुल गांधी एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष श्री मल्लिका अर्जुन खरगे जी ने जो महती दायित्व बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में श्री अखिलेश प्रसाद सिंह जी को दिया है वही के काबिलियत कुशल संगठन करता एवं दूरदर्शी राजनेता के रूप में स्थापित करता है, साथ-साथ इसी जवाबदेही का एहसास दिलाता है की बुद्ध की बिहार की पावन धरती, अशोक के बिहार की क्रांतिकारी धरती, महावीर के बिहार की ज्ञानी धरती एवं चाणक्य के बिहार की नितिज्ञ धरती को एक ऐसे रूप में स्थापित करे जहां समृद्धि समभाओ समझदारी के साथ सभी बिहार वासियो का विकास हो सके, इसी क्रम मे अखिलेश प्रसाद सिंह ने भी बिहार वासियो को स्पष्ट संदेश देने एवं उनकी आकांक्षाओ पर खरा उतरने के लिए उनके मनोभावो को समझने के लिए बिहार के सुदूरवर्ती पूर्वी क्षेत्र मे स्थापित बांका जिला के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर मंदार पर्वत से 1250 किलोमीटर की लंबी यात्रा करने का निर्णय लिया। जिसका समापन बुद्ध की ज्ञानस्थली बोधगया मे होगा। इस समापन स्थल से अखिलेश बाबू के नेतृत्व मे कांग्रेस जन जन तक यह संदेश देने का प्रयास करेगी की बिहार अब जाती, धर्म, क्षेत्र आदि संकीर्ण भावनाओ से ऊपर उठकर स्वर्णिम विकास की राजनीति मे विश्वास करेगी। जहां सबके हीतो की पूर्ति होगी और पुनः बिहार भारत के समृद्ध शासित राज्यो मे अपने आप को स्थापित करेगी।

भारत जोड़ो यात्रा

कर्मयोगी तपस्वी श्री राहुल गांधी जी

अपार जनसैलाब के साथ श्री राहुल गांधी जी के नेतृत्व मे "भारत जोड़ो यात्रा" ऐतिहासिक सफर पर आगे बढ़ रही है। बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार और कुशासन से त्रस्त हमारे देश की जनता की आवाज सुनने सड़को पर राहुल जी निरंतर चल रहे हैं।

कर्मयोगी, सत्यनिष्ठ योद्धा आप की आवाज, (आज पीड़ित जनता, जो बिना दवाई,बिना संस्कार नदी में प्रवाहित या गाड़ दिये गये जो बच रहे है बिना काम, बिना शिक्षा , बिना नौकरी, बिना रोजगार, भविष्य के लिए भयभीत है) भारत की जनता की आवाज है। तुफानो से आप के साथ लड़ लेगे,पर यह भाजपा सरकार के नौटंकी, संवेदनहीन कार्य और विपदा ग्रस्त देश मे अवसरतलाश वाले,अभूतपूर्व चुन्नतियो को पैदा कर रही है । आज देश की जनता को भविष्यद्दष्टा श्री राहुल गांधी जी पर पुर्ण विश्वास है ।ईश्वरीय शक्ति सदा उन पर बनी रहे । पूंजीपतियो ने उनके खिलाफ एक गलत छवि साजिश के रूप मे बनाई। हमे उसके कारण को समझना होगा। 2012 मे जब भूमि अधिग्रहण विधेयक पारित किया जा रहा था तो यह कही ना कही राहुल गांधी जी की सोच थी कि आखिर किसानो की जमीन उद्योगपति ओने पौने दाम मे ले लेते है उनको कैसे समृद्ध किया जाए। उनके साहसिक फैसले पर तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह जी भी राज़ी हुए और किसानो को जमीन के मूल्य का 4 गुना पैसा देने का प्रावधान किया गया ?। बस यही से राहुल गांधी जी के खिलाफ देश का पूंजीवादी वर्ग के पीछे लग गया। क्योंकि इस कानून का सबसे ज्यादा नुकसान उसी वर्ग को हुआ था ?। उस समय से मीडिया को गोदी मीडिया बनाने की शुरुआत हो गई।उन्हे पप्पू , चांदी का चम्मच मे खाने वाला, कांग्रेस का राजकुमार आदी तमगो से नवाजा जाने लगा। मीडिया को मैनेज करके उनके खिलाफ गलत गलत मैसेज फैलाए गए यहां तक की सोशल मीडिया का भी दुरुपयोग उनके इस छवि को खराब करने में उनके विरोधियो ने किया। ?2 ट्वीट पर मैसेज वायरल करने वाले अंध भक्तो की टोलीओ को पूंजीपति हाउस ने मदद किया।

आज 4 महीनो की अथक यात्रा के बाद गर्व से कह सकते है कि आज राहुल गांधी को कोई भी यह कहने से परहेज नही करेगा कि वह एक संत है और आधुनिक भारत मे राजनीति का एक स्वच्छ मापदंड उन्होने खड़ा किया है। भारत के प्रधानमंत्री ने भी आज तक मीडिया से मुखातिब होने का कभी नही सोचा ना उनमे हिम्मत

लेकिन राहुल जी पूरी मीडिया की फौज को बिठाकर खुशनुमा माहौल मे उनके हर एक सवाल का जवाब देते है। सही मायने में देखा जाए देश की आयरन लेडी स्मृति शेष श्रीमती इंदिरा गांधी जी के पोते, देश के आईटी क्रांति के जनक स्मृति शेष राजीव गांधी जी एवं राजनीति मे त्याग की प्रतिमूर्ति श्रीमती सोनिया गांधी जी के सुपुत्र जिनके परिवार ने शुरुआत से ही त्याग किया हो उस वंश वृक्ष मे राहुल गांधी नामक यह तपस्वी पैदा हुआ है।। परिवार मे हमेशा बलिदान ही किया है चाहे अपनी जान का हो या फिर पद त्यागने का इतिहास रहा हो। आज उन्होंने कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को प्रेरणा दी है की हुकूमत से लड़ना है तो सड़को पर आना पड़ेगा यू ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने से हम जनता के बीच मे पुनः स्थापित नही हो सकते।

आज राहुल जी ने भारत छोड़ो यात्रा के माध्यम से कन्याकुमारी से कश्मीर तक हर वर्ग हर धर्म हर तबके के लोगो से मिल रहे है और उनकी मन की पीड़ा को सुन रहे है। पूंजीवाद के इस दौर मे दलितो ,पिछड़ो, अति पिछड़ो, वंचितो, शोषितो, देश के हर वंचित वर्ग की आवाज बनकर कोई काम कर रहा है तो एकमात्र नेता है श्री राहुल गांधी जी।आज उन्होने देश मे एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है सबो को साथ लेकर चलने की बात कर रहे है वह राहुल गांधी जी ही है। क्योंकि यह देश गांधी के सपनो का देश है जहां हर जाति धर्म संप्रदाय के लोग आत्मीयता के भाव से और वसुदेव कुटुंबकम के सिद्धांत को चरितार्थ करने के सपने को संजोए हुए यहां निवास करते है और उस पुरानी परंपरा को मेरी पुनः वापस लाना है तो उसका एकमात्र नेतृत्व करता यदि कोई है इस पूरे देश मे वह राहुल गांधी जी है।

सत्यमेव जयते

लेखक : ई रोहित मणि भूषण, प्रदेश सचिव
बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस

CamScanner

अखिलेश प्रसाद सिंह : मिट्टी, मानुष और मुद्दों के नेता

किसानों ने देश की मिट्टी के लिये रक्त भी बहाया है और उसे पसीने से भी सींचा है। आज लगातार विकसित होता भारत जिस नींव पर खड़ा है वह किसानों के श्रम—स्वेद—रक्त से निर्मित मिट्टी है। आज की कहानी एक ऐसे ही नायक की है जो इसी किसानी मिट्टी की उपज है।

1962 के मध्य में,जब अरवल के कोयल गांव समेत सारा देश दो मोर्चे पर जूझ रहा था, एकओर चीन के साथ सीमा परतो दूसरी ओर उन तमाम अभावों से जो उसके निर्माण में बाधा बन रहे थे। समस्त देश में एक अजीब तनाव घुलाथा, जो ऊपर से तो नही दिख रहा था पर उसकी तपिश से सभी प्रभावित थे। उस इलाके के प्रसिद्ध किसान समाजसेवी शिवप्रसाद सिंह भी इस तपिश को भलीभांति महसूस कर रहे थे। वह समझ रहे थे कि आने वाला समय गरीबो, संसाधनहीन लोगों के लिये कितना संघर्षपूर्ण होनेवाला है। यहीकारणथाकि, समाज के आखरी छोरपर खड़े बेबस इंसान की आवाज उठाने के बाद जो भी बचता वह अपनी पत्नी राजकुमारी देवीजी के साथ गुजारते जो जल्द ही मां बनने वाली थी। वह चाहते थे कि हाशिये पर खड़े लोगों की आवाज बुलंद करने की परंपरा जो उनके खानदान मेंपीढ़ियोंसेचलीआरहीथी–को आगे ले जाने वाला वारिस जल्द से जल्द इस धरती पर आये। जल्द ही वो शुभ घड़ी आभी गई। इस स्वावलंबी, स्वाभिमानी, समर्पित, संघर्ष शील किसान परिवार के घर में- जब देश में नए भारत की लगभग पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी- एक किलकारी गूंजी। दिन था 29 मई। पिता शिव प्रसाद सिंह ने जब पहली बार बच्चे को देखा, तो सहसा उनके मुख से निकला - "इसकी आंखों में भगवान शंकर की तरह अना सक्तिहै, चेहरे पर भी कल्याण का भाव है, मानो यह पूरी दुनियां का कल्याण करने आया है, इसका नाम अखिलेश होगा।"

अखिलेश बाबू का बचपन उस दौर में गुजरा जब देश लगातार स्वयं का निमार्ण कर रहा था। उस समय देश को एक मजबूत नींव की जरूरत थी। कठिन विषयों की समझ रखने वाले शिक्षकों की जरुरत थी। पिता शिव प्रसाद सिंह ने समय की इस मांग को समझते हुए अखिलेश बाबू को समर्थ शिक्षक बनाने का निर्णय लिया। इसके बाद अखिलेश बाबू की जो अध्ययन-यात्रा अरवल के कोयल गांव के प्राथमिक विद्यालय से आरंभ हुई, वह गया होते हुए, पटना के साइंस कॉलेज में जाकर समाप्त हुई। अब अखिलेश बाबू भौतिकी के बड़े विद्वान हो चुके थे, जो कॉलेज में शिक्षकों की अनुपस्थिति में कक्षाएं भी लेने लगे थे। जिसकी चर्चा कुछ इस तरह फैल रही थी कि उनके सहपाठी, छात्र और शिक्षक बस उनके प्रोफेसर पद पर नियुक्त होने की औपचारिकता पूरी होने का इंतजार कर रहे थे।

इस दौरान 1990 में एक बड़ी घटना घटी जिसने अखिलेश बाबू के शांत मन को बहुत उद्वेलित किया। असल इस वर्ष मंडल आयोग की सिफारिशों को लेकर सारा समाज दो खेमों में बटने लगा था। धीरे धीरे इस आग की लपट ने देश को जलाना आरंभ कर दिया, जिसमें सबसे अधिक युवाओं का भविष्य झुलस रहा था। यही वह समय था जब अखिलेश बाबू के अंदर के नेतृत्व कर्तानायक ने अपनी भूमिका को पहचाना और वो छात्र राजनिति में सक्रिय हो गए। असल में इस घटना ने अखिलेश बाबू की सोच को एक ठोस दिशा देने का कार्य किया। अखिलेश बाबू ने महसूस किया कि किस तरह छात्रों का जीवन, उनका भविष्य जातिगत तनाव या संसाधनों की कमी के कारण बर्बाद हो रहा है। बिहार में समुचित शिक्षा-व्यवस्था का अभाव को देखते हुए युवा अखिलेश बाबू ने उसी वक्त ठान लिया की वह इसे बदलेंगे। यही कारण था कि जब एक दिन कक्षा में प्रोफेसर ने छात्रों से पूछा की भविष्य में कौन क्या करना चाहता है तो जहाँ बाकी छात्र सरकारी गैर सरकारी संस्थानों की मलाईदार नौकरियां करने को आतुर दिखे,वहीं अखिलेश बाबू ने सबसे कठिन व संघर्ष का रास्ता चुनने की ओर संकेत करते हुए दृढ़तापूर्वक कहा- "मैं सिर्फ नौकरी करने तक सीमित नही रहना चाहता, युवाओं को नौकरी पाने योग्य बनाना चाहता हूं, समाज के लिए कुछ करना चाहता हूं, देश के हर संघर्षरत नागरिक की आवाज़ बनना चाहता हूं।"

संभव है, उस दिन कक्षा में अखिलेश बाबू की बातें लोगों को बचकानी या गंभीर लगी हो पर आज अगर अखिलेश बाबू के कार्यों पर नजर दौड़ायी जाये तो कहना न

CamScanner

भारत जोड़ो यात्रा

आशीष रंजन सिंह
राजनीतिक विश्लेषक व् शोधकर्ता
दिल्ली विश्वविद्यालय

होगा कि उन्होंने उस दिन अपनी ही बात का शब्द-शब्द सत्यसिद्ध किया है। अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता को प्रमाणित करते हुए वह सक्रिय राजनिति मे शामिल हो गए, इस क्रम वह 1990 मे राष्ट्रीय जनता दल से जुड़े और दस वर्षो तक अनासक्त भाव से एक समर्पित कार्यकर्ता की तरह जनता की एक एक समस्या का समाधान करने का प्रयास किया। सन 2000 मे राष्ट्रीय जनता दल ने उन्हे अरवल विधानसभा क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया, जहा से जीतकर अखिलेश बाबू पहली बार बिहार विधानसभा पहुँचे और राज्य सरकार मे स्वास्थ्य मंत्री के रूप मे शामिल हुए। स्वास्थ्य मंत्री के रूप मे अखिलेश बाबू ने बिहार को बदलने का बीड़ा उठाया। इस क्रम मे बरसो से रुकी पड़ी सरकारी डॉक्टर की नियुक्तियां नियमित हुई, गुटखा तंबाकू पर प्रतिबंध भी लगाया गया। उनके इन क्रांतिकारी प्रयासो की गूंज अब सारे देश मे फैल चुकी थी, और यह महसूस किया जाने लगा था कि ऐसे कुशल नेतृत्वकर्ता की जरुरत सारे देश को है। यही कारण था कि 2004 के लोक सभा चुनाव मे राष्ट्रीय जनता दल ने उन्हे मोतिहारी संसदीय क्षेत्र से अपना प्रत्याशी बनाया। अखिलेश बाबू को इस चुनाव मे भी जीत मिली और वे उम्मीद के मुताबिक केन्द्र सरकार में कृषि और उपभोक्ता मामले के राज्यमंत्री के पद पर सुशोभित हुए। कृषि राज्यमंत्री के रूप मे भी उनका योगदान अतुलनीय है, उन्होने मनरेगा जैसीजन योजना के ड्राफ्टिंग मे अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिंह को अपना राजनीतिक गुरू मानने वाले अखिलेश बाबू वैसे तो सबको साथ लेकर चलने वाले उन विरले नेताओं मे से एक है जिनका कोई राजनीतिक विरोधी नही है। लेकिन मुद्दों की राजनिति करने वाले अखिलेश बाबू के राजनीति पथ मे एक ऐसा भी अवसर आया था जब उन्हें दल और जनता में से किसी एक को चुनना था, परिणाम यह हुआ कि जनहित मे उन्होंने राष्ट्रीय जनता दल का परित्याग कर दिया और 2010 में कांग्रेस में शामिल हो गए।

आज अखिलेश बाबू निर्विवाद रूप से बिहार के सबसे बड़े बौद्धिक नेता है। वे हमेशा से मुद्दों की राजनिति करने मे यकीन रखते है। उनके लिए जनता का हित सर्वोपरि है, और आज भी निस्वार्थ भाव से संसद में राज्यसभा सदस्य के रूप में जनता के हित की बात कर रहे है। अखिलेश बाबू के कदम यही नही रुके है। उनके शब्दो मे-"अभी तो बस जमीन तैयार की जा रही है।" उनका असली सपना तो बिहार की स्थिति को बदलना है। उनका सपना बिहार के शिक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करना है, उनका सपना बहुतेरे मेडिकल कॉलेज व युनिवर्सिटी खोलने का है, जिसमें बच्चों को न सिर्फ सही शिक्षा मिले बल्कि वह समाज मे अपना योगदान देने वाले योग्य नागरिक भी बन सकें। दूसरे शब्दो में कहे तो एक अखिलेश बाबू अपने जैसे कई अखिलेश को तैयार करना चाहते है जो देश के कोने-कोने मे जाकर जन-क्रांति की अलख को जला सके।

अखिलेश बाबू की इस लगन व तपस्या मे बराबर का साथ उनकी पत्नी वीणा सिंह जी से मिलता है। वीणा सिंहजी ने भी बिहार की महिलाओं के को संबल प्रदान करने के लिए कई योजनाओ का नेतृत्व किया किया, उनको आत्मविश्वास देने का व समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया है। वह स्वयं एक प्रबुद्ध महिला है अतः जीवन मे संबलता का क्या महत्व होता है, समझती हैं और समाज के हरतबके को आर्थिक रूप से सक्षम बनाना चाहती हैं। उन्होंने परिवार की कमान अपने हाथ में ले रखी है और अखिलेश बाबू को उनके स्वप्न-पथ, लोक कल्याण मार्ग पर आगे बढ़ने के लिये मुक्त कर रखा है। कहना न होगा पीढ़ियों से देश सेवा करता अखिलेश बाबू का परिवार- जिसमें देशहित के लिए अपना जीवन अर्पित करने की परंपरा रही है, किसानों को व्यवस्था के जाल से स्वतंत्र कराने की परंपरारही है- आज भी अपने पारिवारिक मूल्यों से नही भटका है। बदलते समाज में भले ही भूमिका बदल गई हो पर अखिलेश बाबू आज भी एक स्वतंत्रता मार्ग के योद्धा से कमन हीहै। वह स्वतंत्रता दिला रहे है- समाज के सबसे कमजोर तबके को उसकी कमजोरी से, उसके बेबसी से, उसके दर्द से, उसके अभाव से। जिसकी आज बिहार को ही नही समूचे देश को जरूरत है।

हाथ से हाथ जोड़ो अभियान के पर्यवेक्षक सह पूर्व प्रदेश अध्यक्ष कांग्रेस का दिल्ली में हुआ जोरदार स्वागत

दिल्ली। बिहार कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सह बिहार विधान परिषद के सदस्य मदन मोहन झा जी को कांग्रेस पार्टी के हाथ से हाथ जोड़ो कार्यक्रम के मद्देनजर दिल्ली का पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया है।

पर्यवेक्षक नियुक्त होने के बाद पहली बार दिल्ली पहुंचे श्री झा का दिल्ली प्रदेश इकाई के कार्यकर्ताओ ने जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान श्री झा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित भारत जोड़ो यात्रा मे पूरे देश को एक सूत्र मे पिरोने का काम किया है। वो भी ऐसे समय मे जब वर्तमान की केंद्र सरकार जाति और धर्म के नाम पर समाज को बांटने और विभक्त करने का काम कर रही है। पूरे देश मे माहौल कांग्रेस के पक्ष मे बन रहा है। लोग वर्तमान की शासन व्यवस्था मे घुटन महसूस कर रहे है। उन्होंने केंद्र सरकार की वर्तमान नीतियों पर हमला करते हुए कहा कि सरकार के पास शिवाय हिंदू मुस्लिम करने के ,कोई भी दूसरा विकास का मुद्दा नही है। उसकी यही नीति समाज मे विग्रह पैदा कर रही। जिसे खत्म करने और समाज मे आपसी भाईचारा बढ़ाने और कायम रखने का काम आज भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान पार्टी के दिल्ली प्रदेश इकाई के पदाधिकारी व सैकड़ो की संख्या मे कार्यकर्ता मौजूद थे।।

भारत जोड़ो यात्रा

शेरे बिहार वो

नेता जो बिहार मे पिछड़ी जातियो मे राजनीति करने आया तो प्रदेश भर मे सैकड़ो स्कूल और डिग्री कॉलेज खुलवाएं, ए बीक राजनेता जो दबंग भी था और विजनरी भी था। यह वह नेता है जिसे जिसके सहारे की जरूरत बिहार मे तब कांग्रेस को भी थी। बिहार की राजनीति मे राम लखन सिंह यादव का नाम उनके कद के मुताबिक बहुत कम लिया जाता है। जबकि इंदिरा गांधी भी समय समय पर बिहार मे राजनीतिक मोर्चे पर निपटने के राम लखन सिंह यादव को याद किया करती थी।

उस जमाने मे बिहार मे अगड़ी जातियां ही सत्ता के अनेको केंद्र मे थी। ऐसे मे बिहार मे कांग्रेस पिछड़ो में यादवों से राम लखन सिंह यादव और दलितों से जगजीवन राम दोनो के महत्व को बखूबी समझती थी।

राम लखन सिंह यादव के बिहार के विकास मे योगदान पर लोगों को बहुत कुछ जानकारी नही है। किंतु बिहार के अधिकांश जिले में राम लखन सिंह यादव की कोशिशो स्थापित इंटर कॉलेज, डिग्री कॉलेज मिलेंगे। ये कॉलेज वित रहित और वित पोषित दोनो तरह के है। यूपी बिहार मे शायद ही इतने बड़े पैमाने पर किसी नेता की प्रेरणा से सामुदायिक स्तर पर कॉलेजों की स्थापना की गई हो। इन कॉलेजो के समाज मे सकारात्मक योगदान पर शोध हो तो शायद राम लखन सिंह यादव उनके समाज के सबसे बड़े उद्धारक साबित होगे।

बिहार में यादवों के लिए राजनीतिक उत्थान कोई करने वाला नेता था तो राम लखन सिंह यादव थे

बिहार मे बहुत सारे लोग लालू प्रसाद यादव को यादवो का तारणहार बता देते है। जबकि हकीकत बात यह कि यादवो की राजनीतिक चेतना लालू प्रसाद यादव के राज मे जरूर तेज हुई।

किंतु यादव समाज के बुद्धिजीवी सोचने विचारने वाले राजनीतिक कार्यकर्ता, पुराने दौर को जानने वाले लोगो से बात कीजिए तो वे कहते है कि बिहार मे यादवो के लिए राजनीतिक उत्थान कोई करने वाला नेता था तो राम लखन सिंह यादव थे न कि लालू प्रसाद यादव है। राम लखन सिंह यादव बिहार में पिछड़ी जातियो मे पहले ऐसे नेता थे जिन्होंने शिक्षा के महत्व को समझा।

यादव समाज के एक बुद्धजीवी कहते है कि बिहार मे यादवो का सामाजिक उत्थान मे राम लखन सिंह यादव की भूमिका है तो आर्थिक उत्थान नीतीश कुमार के राज में हुआ।

हालांकि तमाम आंकड़े साबित करते है कि यादवों का राजनीतिक उत्थान में लालू प्रसाद यादव के युग मे ही हुआ है।

रामलखन सिंह यादव को शेर ए बिहार कहा गया। इसके पीछे की वजह यह थी कि वो स्वभाव से दबंग थे। लेकिन उनके कद का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि वो बिहार मे पिछड़ी जातियो मे पहले ऐसे नेता थे जिन्हे रामलखन बाबू कहा गया। भूमिहारों में श्रीकृष्ण सिंह को श्री बाबू, राजपूतो में अनुग्रह नारायण सिंह को श्री बाबू, रविदासो में जगजीवन राम को जगजीवन बाबू कहा गया उसी तरह यादवो मे जन्मे राम लखन सिंह यादव को भी राजनीतिक गलियो और समाज मे राम लखन बाबू कहा गया। यह उनके कद को बयान करने के लिए काफी है।

यदि राम लखन सिंह यादव जैसे नेता दूसरी जातियो मे भी पैदा हुए होते तो बिहार की स्थिति और बेहतर होती।

-मुकेश कुमार (शिक्षक) जी की कलम से
ग्राम– बंधुगंज, प्रखंड– मोदनगंज (जहानाबाद)

चार बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के संस्थापक, महान शिक्षाविद एवं अमर स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी महामना मदनमोहन मालवीय जी की जयंती पर शत शत नमन।राजनीति, शिक्षा एवं स्वतंत्रता आंदोलन में आपका योगदान चिरकाल तक देश को शक्ति देता रहेगा।

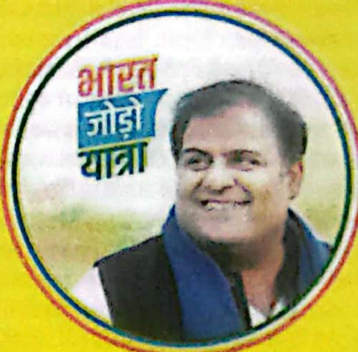

कल लालकिले की प्राचीर से अपने ऐतिहासिक भाषण मे जननायक राहुल गांधी जी ने कहा कि #भारतजोड़ोयात्रा यात्रा के दौरान कई पशु भी रास्ते में पड़े पर किसी यात्री ने उन्हें हानि नहीं पहुंचाई।

#BJPITCell के भाड़े के ट्रोलों ने पूरे दिन फैलाया कि राहुलजी ने यात्रियों को पशु कहा! बेशर्म भाजपाइयों ने राजनीति के स्तर को इतना नीचे गिरा दिया है!

जनता को भ्रमित करना और अमीरों की सेवा करना इनका परम् धर्म है!

सरदार वल्लभ भाई पटेल

कुशल समझ से भारत आज विश्व का नेतृत्व कर रही है

1885 मे कांग्रेस पार्टी की स्थापना ए ओ ह्यूम ने कुल 72 लोगो को साथ लेकर मुम्बई मे किया था जिसके पहले अध्यक्ष ब्योमेशचंद्र बनर्जी थे। कांग्रेस पार्टी ने उस समय से स्वतंत्रता आंदोलन में आंदोलनकारियों का नेतृत्व किया और सफल नेतृत्व में देश आजाद हुआ।आजादी के बाद भी लगातार कांग्रेस पार्टी ने देश के बिकास के लिए काम किया। अंग्रेजों द्वारा देश को लूट कर खोखला कर दिया गया जिसे कांग्रेस पार्टी ने बिकास के पथ पर अग्रसर किया और भारत पं जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी नेतृत्व में, सरदार वल्लभ भाई पटेल के कुशल समझ से भारत आज विश्व का नेतृत्व कर रही है। स्थापना दिवस पर समारोह को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस के प्रतिनिधि एडवोकेट निसार अख्तर अंसारी ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने अंग्रेजो द्वारा जर्जर अवस्था मे छोड़े गए भारत को अग्रणी देश बनाने का काम किया। भारत को एक महाशक्ति बनाने का काम किया उस भारत को आज भारत के सत्तारुढ़ पार्टी ने तार तार कर दिया है। देश को कंगाल कर दिया गया है, इसलिए आज हम भारतवासियों को सचेत होने की जरूरत हैऔर जिस आजादी के लिए कांग्रेस पार्टी के अनेक नेताओं ने अपनी कुर्बानी दिए। अंग्रेजो के काल कोठरियों में गुजारने का काम किया।वही कांग्रेस पार्टी फिर से देश को सम्भाल सकती है।आज भारतवासियों को कांग्रेस पार्टी के साथ खड़े होने की जरूरत है। आज आप सब कांग्रेस के कंधे से कंधे मिलाकर चलने का शपथ लेना होगा।

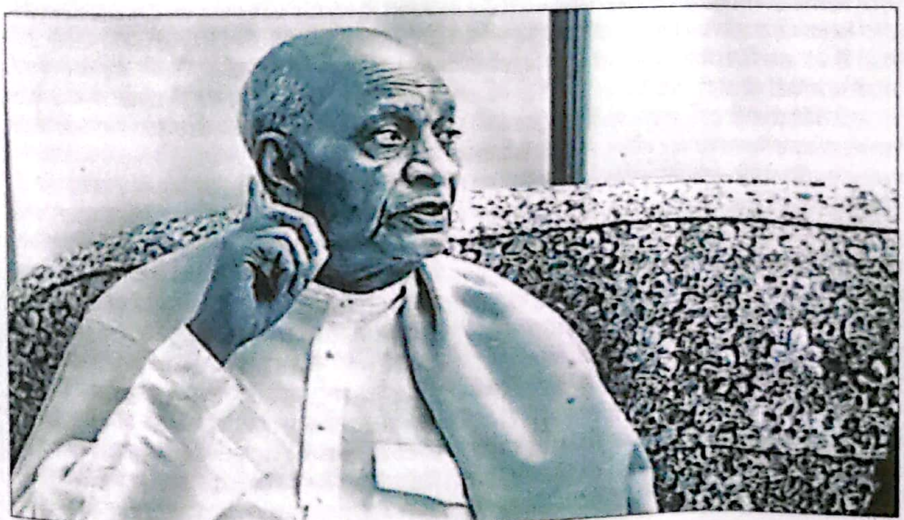

कांग्रेस को मजबूत करना हमारा राष्ट्रधर्म

भारत की प्राचीनतम राजनितिक पार्टी कांग्रेस जिसने स्वतंत्रता की लड़ाई में बारूद का काम किया!हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई को परस्पर एकता में बाँधने का सन्देश दिया!जिसने अनगिनत कुर्बानियां दी जिसने हमारे पूर्वजो की वीरता, शहीदों की यादो को संजोग कर रखा!जिसने आजाद भारत को औद्योगिकरण, शिक्षा, कृषि, आईटी सहित सम्पूर्ण क्षेत्र मे विश्व को एक नया आयाम दिया आज आप से कुछ मांग रहा है

क्या आपका कोई नैतिक कर्तव्य नहीं? याद कीजिए अपने पूर्वजो को जिनके वीरता से दुश्मन काँपते थे! इतिहास साक्षी है इसी बिहार की धरती पर भगत सिंह के हत्यारों का बदला लिया गया था इसी बिहार को महात्मा गाँधी ने अपना कर्मक्षेत्र चुना! जब बिहार में पहली सरकार कांग्रेस की बनी तो डॉ श्रीकृष्ण सिंह ने सर्वप्रथम ही जमींदारी प्रथा का अंत किया दलित भाइयों को देवघर मंदिर में साथ लें जाकर प्रवेश दिलाया! स्पष्ट है कांग्रेस शुरुआत से ही न जातपात की राजनीती की न ही धर्म की!उसी कांग्रेस के उत्तराधिकारी बने है डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह! राष्ट्रीय अध्यक्ष को आशा ही नही पूर्ण विश्वास है की अखिलेश प्रसाद सिंह ही बिहार कांग्रेस को नया सवेरा देंगे! जब से अखिलेश सिंह के मजबूत कंधो को नया दायित्व मिला तभी से ही पुरे बिहार के 11 करोड़ जनता में नया जोश आ गया! इस बार बिहार की जनता किसी के बहकावे में नहीं आने वाली उन्हें पता चल चूका है की हिटलर के सेनापति गोबल्स की बात जो कहा करता था झूठ को सौ बार बोलिये वह अंत में सच लगेगा! बिहार के युवा, महिला, किसान, मजदूर, कर्मचारी, बुद्धिजीवी सभी को मालूम हो चूका की 39 सांसद देने वाले बिहार को भारतीय जनता पार्टी ने कितना ठगा! अब और नही ठगाएंगे अब और हिन्दू – मुस्लिम के चक्कर में गंगा यमुना की संगम को खत्म करेंगे!बिहार की धरती से एक नया मानवता का सन्देश देंगे! बिहारपुत्र रामधारी सिंह 'दिनकर' ने कहा था

"जुल्मी को जुल्मी कहने से, जीभ जहाँ डर जाती है
पौरुष होता क्षार वहाँ, जवानी जलकर मरती है

कोई कितना भी जोर लगाये, सीबीआई, इडी, धनबल का प्रयोग कर लें इसबार जनता समाज में क्रांति है जिसे कोई रोक नही सकता।

-गौतम कुमार, पानापुर लंगा, हाजीपुर, वैशाली

भारत जोड़ो यात्रा

सोनिया गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस....

सोनिया गांधी का मानवीय पक्ष भी है। विदेश से आई युवती के जीवन में प्रौढ़ता आते ही वैधव्य छा गया। घाघ पचड़ेबाज लोग इटली लौट जाने का तंज कसने लगे। गुमनामी के रेवड़ में रहने से बेहतर भारत में संघी जहिलत झेलने का साहस सोनिया ने दिखाया।

सार्वजनिक जीवन मे सोनिया गांधी की भागीदारी सास श्रीमती इंदिरा गांधी की मृत्यु और पति के प्रधानमंत्री के चुनाव मे मतदान से शुरू हुआ था। सन 1991 मे राजीव गांधी की मृत्यु के बाद उन्होने कांग्रेस अध्यझ पद को लेने से मना कर दिया था। नरसिंम्हा राव प्रधानमंत्री बने। सन 1996 मे अर्जुन सिंह, नरायन दत्त तिवारी. राजेश पायलट, माधव राव सिंधिया इत्यादि सीताराम केशरी जो कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे, उनसे मतभेद के कारण कांग्रेस छोड़ दिये। कांग्रेस बिखरने लगी थी, कार्यकर्ताओ तथा नेताओ के आग्रह पर सोनिया गांधी ने कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ली और कांग्रेस पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष बनी। सोनिया गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय राजनीति मे कुछ इतिहास तो रचा है। प्रधानमंत्री बन पाना उनकी नीयत और नियति नही हो पाई। उन्होने अन्तरात्मा की आवाज और सन्तानो की भरोसेमंद सलाह सुनी। उनका नेतृत्व विकल्पहीन नही है। लोकसभा चुनाव 2004 तथा 2009 में सोनिया के नेतृत्व मे कांग्रेस को मिला समर्थन राजनीतिज्ञो, मीडिया और विदेशियो को भी अचंभित कर गया था। आपको याद होगा, बड़बोली सुषमा स्वराज तथा धाकड़ ओ. बी. सी नेता सन्यासिनी उमा भारती ने सोनिया की प्रधानमंत्री पद पर संभावित दावेदारी के कारण अपने सिर का मुंडन कराने ऐलान किया था।

सोनिया गांधी का मानवीय पक्ष भी है। विदेश से आई युवती के जीवन मे प्रौढ़ता आते ही वैधव्य छा गया। घाघ पचड़ेबाज लोग इटली लौट जाने का तंज कसने लगे। गुमनामी के रेवड़ मे रहने से बेहतर भारत मे संघी जहिलत झेलने का साहस सोनिया ने दिखाया। मौत का भय परिवार पर मंडरा रहा था, बद्दुआवो ने लेकिन सफलता नही पाई। संघ परिवार ने तो सोनिया को भारत मे रहने पर अपराधी ही प्रचारित कर दिया था। दीन दयाल के हत्यारे सोनिया गांधी को ज़लील कर रहे थे। राजीव गांधी की हत्या के बाद सोनिया गांधी ने प्रतिहिंसा के बदले वीतराग दिखाया। वह काबिले गौर है।

हिंदू धर्म मे ऐसी नफरत कहां से आती है, यह औरत जब जेल की सलाखों मे होगी तभी कुछ नफरत से बजबजाते दिलो को शायद सुकून मिले। मै इनकी तस्वीर देखता हूं और सोचता हूं कि आख़िर वह कौन सी नफ़रत है, जो इनको बर्दाश्त नही कर पा रही है। आख़िर वह कौन से खोखली शक्ति वाले लोग हैं, जो इनसे डरकर इनका घेर कर शिकार करना चाहते हैं। सब मिलकर इस एक को निपटाने के लिए रोज प्रपंच गढ़ते हैं।" हमारी समझ से पार्टी के बाहर जितने हैं उससे कम पार्टी के अंदर नही हैं।

संघी करिंदा मोदी द्वारा राजीव गांधी फाउंडेशन को सामने रखकर फिर एक बार कीचड़ से भरी तोपो का रुख इस महिला की तरफ किया गया है। हजारो हमले जो चरित्र से शुरू होकर राजनीति तक इनपर किये जाते रहे हैं और हर बार यह महिला इन हमलो से निकलकर अपनी पवित्रता को साबित करती रही है।

यह एक महिला है, जिसने अपनी ज़िन्दगी जितनी जी नही, उससे ज्यादा परीक्षाएं दी है। कभी पति प्रेम पर सवाल उठे तो कभी धर्म पर, कभी नागरिकता पर, तो कभी देशप्रेम पर सवाल उठे तो कभी विदेशी सम्बन्धो को घसीटा गया। इस औरत की घर की चौखट से संसद की ड्योढ़ी तक इतने सवाल बिखेरे गए कि इसे टूट जाना चाहिए था, मगर टूटना तो दूर बल्कि बिना डिगे यह सब सवाल, सारी गन्दी सोच, सारे कीचड़ और कालिख़ के बीच से निकलकर आम लोगो के दिलो मे बैठ गई। सब मुंह तकते रह गए विदेश विदेशी कहकर और अपने विपक्षियो के जबड़े से सत्ता छीनकर एक झटके में बीस साल पहले सताई गई क़ौम के सबसे योग्य प्रतिनिधि मनमोहन सिंह के हाथ मे दे दी। जो सत्ता के लिए तमाम प्रपंच करते थे, उनको समझ भी नही आया कि क्या कुर्सी भी छोड़ी जा सकती है, यही तो वह कुर्सी थी जिसके लिए यह अपनो की पीठ मे छूरा भोखने से नही चूकते थे, इसने एक झटके मे छोड़ दी। हमलों पर बचाव की रणनीति के सहारे जीत दर्ज की। खामोश मतदाताओं ने फैसला सुनाया। वाचाल मतदाता इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की गलतफहमियो के मकड़जाल मे लिपटते रहे। हमले झेलती सोनिया के लिए स्त्रियो की संवेदनशीलता ने राजनीति को नया तेवर दिया। चौदहवी लोकसभा का चुनाव नतीजा खामोश मतदाताओ की वाचाल मतदाताओं पर जीत का सोनिया-पर्व हो गया।

हार से तिलमिलाये संघियों को जब कुछ नही मिला तब नया खेल खेला गया कि कुर्सी पर तो कठपुतली है। मक्कारो ने क़ाबिल योग्य और सरल मनमोहन को कठपुतली करार देकर फिर अपनी तोपे साफ की और उसका रुख फिर इस महिला की ओर घुमा दिया। दुनिया की हर गलती की पैबंद इस महिला पर चस्पा की जाने लगी, इनके बच्चो को भी बदनाम करने वाली तोपो के सामने बाँ ध दिया गया और एक एक कर सब इनपर हँ सते, इनका मज़ाक बनाते और इन्हे मूर्ख साबित करने के लिए करोड़ो रुपये और हजारो मन्दबुद्धि ट्रोलसेना को लगाये रहे। ऐसे ऐसे आरोप ऐसी ऐसी फ़ोटो एडिट करके लगाई जाती की बेशर्म से बेशर्म इंसान शरमा जाए, मगर यह तो इंसान ही नही थे, तो शर्म काहे की करते है चरित्र पर हमले, मगर यह औरत रत्ती भर डिगी नही।

सोनिया गांधी पैगम्बर, मसीहा या अवतार नही है। वे भाजपाई आडंबर और हाइटेक चुनाव प्रचार के बदले लोगो के करीब खुद जाती रही। उनके भाषणो मे तालियां कम बजी। कई बार भीड़ भी कम जुटी। चुनाव परिणाम लेकिन तालियो, भीड़, पुष्पहारो और लोकप्रियता के स्थापित मानदंडो की पराजय का भी हुआ। बहुलवादी संस्कृति की कांग्रेस सोनिया के एकल प्रचारक होने मे कैद होकर रह गई। हिन्दुत्व को भारत मानने वाली भाजपा स्टार प्रचारको से लैस जश्न जू रही। सोनिया गांधी इतिहास का उद्दाम नही है। अतिशयोक्ति का विशेषण नही है। राजनीति का ककहरा भी ससुराल के अदब मे मौन रहकर सास से सीखा। ईमान खरीदने वाले

भारत जोड़ो यात्रा

अजित कुमार सिन्हा
कांग्रेसी नेता मीनापुर मुजफ्फरपुर बिहार

माहिर खिलाड़ी कारपोरेट पूंजीपतियों को लगा होगा कि इनको खरीद लिया जा सकता है, मगर वह बाज़ार से मुँह लटकाए लौटा क्योंकि जिसे खरीदने गया था, वह बाज़ार में था ही नहीं, जो बाज़ार में नहीं उसकी बोली क्या लगाए, खिसियाहट में उसने शाही डंडा चलाया और चाहा कि इससे तो झुका ही लेंगे मगर नहीं झुका सका। उसे लगता है कि हर एक कि एक कीमत होती है, हर एक को डराया जा सकता है, हर एक को तोड़ा जा सकता है, हर एक को झुकाया जा सकता है मगर वह यह भूल जाता है कि कुछ लोग न बिकते हैं, न टूटते है, न झुकते है और न ही डरते है यह महात्मा गाँधी, भगत सिंह, नेहरू, पटेल, आज़ाद की परम्परा के लोग है, मिट जाएँगे मगर झुकेंगे नही।

पहली बार हुआ 2004 से 2014 तक सत्ता का नाभि-केन्द्र कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी रही। विपरीत स्थितियों में सहनशीलता, कूटनीतिक बुद्धि और रहस्यमय धीरज के कारण सोनिया ने भारतीय जीवन में मर्तबा हासिल कर लिया, जो राजनीति में अनोखा है। प्रधानमंत्री का पद ठुकराकर लोकप्रियता के सबसे ऊंचे सोपान पर खड़ी हो गई। मुझे यह पता है, यह एक महिला उनको ख्वाब में भी डराती है। जब कोई अधर्म करके बिस्तर पर लेटता है, तब उसको नींद नही आती, यह महिला अधर्मियों की नींद उड़ाने के लिए काफ़ी है, तभी हर महीने इसके खिलाफ तोपे तान दी जाती है और झूठी बातों के थाल सजाए जाते है, इसी का परिणाम हुआ 2014 में कारपोरेट, संघ और संघी दलाल नौकरशाह, विनोद राय, केजरीवाल, प्रशांत भूषण, किरन बेदी, वी.के. सिंह इत्यादि सब मिलकर, एक फौज के भगोड़ा ट्रक ड्राईवर को गांधी टोपी पहनाकर आगे करके लोकपाल, टू जी, कोयला घोटाला इत्यादि का आरोप लगाकर मनमोहन सरकार को बदनाम किया गया, परिणाम मोदी सरकार है। जाँच मे क्या मिला? सभी आरोप गलत निकले, तब तक एक फांसिस्ट सरकार दिल्ली पर काबिज हो गयी। राजीव गाँधी फाउंडेशन हो या दूसरी संस्थाएँ, आप खुलकर इनपर हमला कीजिये, मगर हासिल नही होगा, जो आज तक होता आया है, सिफर... खिसियाकर फिर इनका पहला नाम ही चिल्ला चिल्ला कर बोलना पड़ेगा, क्योंकि खिसियाए अधर्मी अहंकारी लोग चीर हरण ही करते है। मुझे हँसी आती है कि आखिर इस महिला से इतना डर क्यों। क्यों तेज़ नए नए बहाने ढूंढे जाते है उन्हे घसीटने के लिए, आखिर वह कौन सा डर है जो सत्ता को नींद नही आने दे रहा। इतना बेचैनी तो अधर्म मे होती है, जो धर्म देख फड़फड़ाने लगता है, इतना डर तो रात की कालिख मे होता है कि वह सूरज की एक किरण देख तड़प उठता है। यह औरत प्रेम, समर्पण और त्याग का प्रतीक है। ऐसे उदाहरण पिछले सत्तर सालो मे देखने को नही मिलेंगे, इसलिए इनसे अधर्मी डरते है क्योंकि यह गुण ईश्वर देता है। ईश्वर अपने होने का संकेत ही प्रेम और त्याग के रूप मे देता है और जिस हृदय मे ईश्वर न जाना चाहे, उसमे अहंकार और नफरत भर देता है। यह महिला भविष्य मे दुनिया भर मे पढ़ी जाएगी, यह मान लो... दुनिया की सबसे शक्तिशाली महिला जो दक्षिणपंथ के सामने न रुकी, न थकी, न डिगी, न टूटी और न झुकी..... । तमाम तोपे जंग खाकर गिरेंगी फिर, क्योंकि वह अधर्म के रास्ते पर है।

कांग्रेस सबसे पुराना संगठन है। आज़ादी के आन्दोलन का नेतृत्व किया और सबसे लंबे समय तक हुकूमत भी की। आज कांग्रेस को असाधारण चुनौतियों और अपनी लगातार गलतियों से जूझना पड़ रहा है। इसके पिछे दिग्विजय कम्प कांग्रेस के अंदर सेकुलरिज्म के मुखौटे मे छिपे हुये संघी जयचंद के वंशज ज्यादा है। देश की दौलत देशी विदेशी कॉरपोरेटियो को औने पौने मोदी सरकार द्वारा बेची जा रही है। बेशर्म लूट से प्राप्त धन विकास सूचकांक के रूप मे गोदी मीडिया प्रचार कर रहा है।

किसान आन्दोलन कर रहे है। आत्महत्या कर रहे है। मंत्री देश को लूटे और देश के गृह राज्य मंत्री का बेटा दिन दहाड़े जनता को जीप से रौंद रहा है? कांग्रेस मे मजबूरी क्यो दिख रही है? सबसे पुराना राजनीतिक दल दरकता सा क्यो हो रहा है? कांग्रेस की सियासी हालत इतना लाचार क्यो है? प्रियंका गांधी की शख्सियत मे राजनीतिक ट्रेनिंग तथा अनुभव के बिना इन्दिरा गांधी के किरदार को क्यो जबरदस्ती ठूसा जा रहा है? राहुल गांधी को जबरदस्ती मंदिर मंदिर घूमाकर जनेऊ पहनाकर हिंदू क्यू साबित किया जा रहा है, इसके पिछे कौन लोग है? राहुल अध्यक्ष बनकर नेतृत्व से क्यू भाग रहे है, जबकि उनको पता है कांग्रेस का सीमेंट नेहरू परिवार है, सेकुलरिज्म का ब्रांड एंबेस्डर नेहरू गांधी परिवार ही है।

कांग्रेस अध्यक्ष का पद गलत सलाह पर छोड़ने वाले लेकिन सक्रिय राहुल गांधी हर दूसरी रग पर हाथ रखने की कोशिश तो करते है। लेकिन केवल इतने लक्षणों से इतिहास नहीं बनेगा। कांग्रेस को सोनिया गांधी की अध्यक्षी के बाद राहुल के नेतृत्व मे सोचना है भारत का भविष्य कैसा होगा। वन, खनिज, सरकारी सरकारी उद्योगों और आदिवासी संपत्तियो की खुले आम सरकार के जरिए डकैती हो रही है। कॉरपोरेटियो ने कोरोना काल मे भी देश की बदहाली के वक्त बेईमानी और धूर्तता के साथ जनता की दौलत लूटी है। अदानी, टाटा, अंबानी, वेदान्ता जैसे कई परिवार राजनीतिक जीवन मे घुसपैठ कर चुके है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व मे संसद ने ऐसे फैसले किए है कि राष्ट्रीय दौलत और कुदरती संसाधनों पर आर्थिक डाका डालने का कानूनी अधिकार इजारेदारों को मिल गया। जबरिया आदिवासियों की भूमि हड़पना, सरकारी उद्यमों की खरीदफरोख्त और विशेष आर्थिक क्षेत्र इसके कुछ उदाहरण है। ऊर्जा क्षेत्र मे निजी निवेशको की चांदी है। भारतीय पूंजीवाद वैश्विक पूंजीवाद का अनुचर बना है। यही हाल रहा तो राजनीति मे वह धड़कन धीमी हो जाएगी जो लोकतंत्र का अहसास है। एक व्यक्ति इतिहास मे इतना बड़ा हो गया कि नारा लगवाए 'आएगा तो वो ही।' कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को इन सवालों से जूझने का वक्त बुरी तरह घेर चुका है। कांग्रेस और भाजपा के मुकाबले की बेमेल लड़ाई है। कांग्रेस को गांधी, नेहरू और इन्दिरा के कार्यक्रमो को समकालीन लेकिन लचीला करना होगा। कांग्रेस को मंदिर-मस्जिद, हिंदू - हिंदुत्व के लफड़े से दूर रहना होगा, कांग्रेस को भुखमरी, बेरोजगारी, महंगाई, के सवाल पर लड़ना होगा। कांग्रेस को हिंदू - हिंदुत्व की जगह सेकुलरिज्म और इंडियन नेशनलिज्म को पूरे ताकत स्थापित करने के लिये कटिबद्ध होना पड़ेगा। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा सामने है, राहुल गांधी सड़क पर है जनता साथ मे आकर खड़ी हो गयी है, आगे आगे राहुल गांधी पिछे जनता है.

चापलूसी को देशभक्ति, मक्कारी को फकीरी, भोगी को योगी, श्रृंगार के नाम पर ढोंग को सादगी, कालनेमि को साधु, बर्बादी को बुलंदी, भ्रष्टाचार अराजकता को गुजरात माडल, बुराई को अच्छाई, दंगाई को देशप्रेमी और गोडसे को गांधी के रूप मे स्थापित करने का प्रयास जोरो से किया जा रहा है। रामराज्य की स्थापना का शोर जारी है देखना है आपको फासिज्म और सकुलरिज्म मे आप किसको चुनते है
.........**जय हिंद, जय भारत, जय किसान, जय कांग्रेस** ।

राहुल गांधी

देश के एकलौता सजग, साहसी, संघर्षशील, ईमानदार, जनप्रिय विपक्ष

-विजय कुमार मिट्ठू

अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के पूर्व अध्यक्ष सांसद राहुल गांधी विगत आठ वर्षो से देश के सजग, साहसी, विपक्ष की ईमानदारी पूर्वक निर्वहन करते हुए किसान, मजदूर, छात्र, नौजवान एवम् आमजन के समस्याओ के दिन, रात संघर्षशील है।

आज देश के सत्ता पर काबिज लोग, विपक्ष ,देश की आजादी दिलाने से लेकर चौहमुखी विकास कराने वाली कांग्रेस पार्टी, सहित सभी विपक्षी दलो को समाप्त करने की बाते करने, संसद मे विपक्षी दलो के सांसदो द्वारा जमीनी हकीकत वाले मुद्दा उठाने पर देशद्रोही तक कहने, होहल्ला कर बैठाने, सभी संवैधानिक संस्थानो सी बी आई, ई डी जैसे संस्था को पालतू तोता बना कर बेवजह विपक्ष को परेशान करने, से व्यथित अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की चिंतन शिविर मे * भारत जोड़ो यात्रा * के माध्यम से देशवासियो से रूबरू होने का कार्यक्रम आज भारत ही नही पूरे विश्व के लोकतंत्र का एकलौता महानायक बना दिया है, राहुल गांधी को।

3500 किलोमीटर, 150 दिन, 12 राज्य की भारत जोड़ो यात्रा अब अंतिम पखवारे मे है जिसका अंतिम पड़ाव जम्मू कश्मीर मे राहुल गांधी राष्ट्रीय ध्वज फहरा कर समाप्त करेंगे। 07 सितंबर 2022 को तमिलनाडु के कन्याकुमारी से शुरू होकर केरल, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पंजाब,में जारी है, राहुल गांधी इस ऐतिहासिक पदयात्रा में देश के सभी राजनीतिक दलों के लोग, सोशल एक्टिविस्ट, किसान, मजदूर, छात्र, नौजवान,एवम् आमजन शामिल हुए, तो कुछ इसकी सराहना की। भारत जोड़ो यात्रा जहां से भी गुजरी है सभी धार्मिक स्थलों में माथा टेकने, कमरतोड़ महंगाई, चरम पर पहुंची बेरोजगारी, आपसी भाईचारा में घोर कमी, चीन जैसे देश के गलत रवैए के लिए करारा जवाब देने, आदि कई ज्वलंत मुद्दों पर समानित जनमानस से खुल कर जुड़ाव हुआ। राहुल गांधी ने अपनी इस ऐतिहासिक भारत जोड़ो यात्रा के अनुभव को साझा करने हेतु जनता के नाम संदेश जारी किया है, जिसे जन, जन में वितरित करते हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी के सदस्य सह क्षेत्रीय प्रवक्ता प्रो विजय कुमार मिट्ठू, पूर्व विधायक मो खान अली, जिला उपाध्यक्ष राम प्रमोद सिंह, बाबूलाल प्रसाद सिंह, अमित कुमार सिंह उर्फ रिंकू सिंह, सच्चितानंद प्रसाद, शिव कुमार चौरसिया, उदय शंकर पालित, बाल्मिकी प्रसाद, जगरूप यादव, मो समद, असरफ इमाम, सुरेंद्र शर्मा आदि ने कहा है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस व्यापक जड़ो वाली हिंदुस्तान की एक राजनीतिक पार्टी के साथ साथ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख पार्टी है। और जिस तरह से आज हिंदुस्तान की अखंडता को तोड़ी जा रही है उसे देखते ही देखते हमारे नेता श्री राहुल गांधी जी ने भारत जोड़ो यात्रा के मध्यम से आज पूरे हिन्दुस्तान को जोड़ दिया है। आज कन्याकुमारी से जम्मू-कश्मीर तक लोग एक ही सपना देख रहे हैं, एक खुशहाल हिन्दुस्तान का सपना। इसके लिए हम सभी नेता श्री राहुल गांधी जी का तहे दिल से आभार प्रकट करते हुए हम सभी को गर्व है हम कांग्रेस हैं।

-जय हिन्द

-सनी आनंद उर्फ सुभाष

देखते ही देखते नेता जी श्री राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा के मध्यम से आज पूरे हिन्दुस्तान को जोड़ दिया है।

आज कन्याकुमारी से जम्मू-कश्मीर तक लोग एक ही सपना देख रहे हैं, एक खुशहाल हिन्दुस्तान का सपना। इसके लिए हम सभी नेता जी राहुल गांधी जी का तहे दिल से आभार प्रकट करते हुए हम सभी को गर्व है हम कांग्रेस है।

-जय हिन्द

-कामरान हुसैन, प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रभारी, बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी सोशल मीडिया विभाग।

CamScanner

भारत जोड़ो यात्रा

कांग्रेस पार्टी अपने आप में एक ऐसा विचार है

कांग्रेस

एक विचार अगर कांग्रेस पार्टी को भारतीयता की मूल भावना का संगम कह दिया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजी साम्राज्य के अत्याचारों से भारतीय जनता की रक्षक के रूप में उभरी कांग्रेस पार्टी स्वतंत्रता के पश्चात् आम जनता के अधिकारों की पोषक के रूप में स्थापित हुई ऐसा नही है कि 137 साल की यह यात्रा कांग्रेस पार्टी के लिए सुगमता से भरी रही हो

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजी साम्राज्य ने कांग्रेस की विचारधारा पर लगातार हमले किए; उसको नष्ट करने की नापाक कोशिशें की गयी ये कोशिशें बेहद दमनकारी और वीभत्स होती गयी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए समाज के सभी वर्गों का साथ चलना आवश्यक थो कांग्रेस पार्टी ने सबसे पहले भारतीय जनमानस में आपसी सहयोग एवं समानता की भावना विकसित करने का कार्य कियो भारतीय समाज में दीमक की तरह फैली छुआछूत की भावना को मिटाने के लिए ही कांग्रेस के पुरोधा और स्वतंत्रता के महानायक राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने स्वयं शौचालय साफ़ करने का निर्णय लियो इसका एकमात्र मकसद था- भारतीय समाज में व्याप्त छुआछूत, ऊंच-नीच,भेदभाव की भावना को जड़ से मिटा देनो इस तरह सम्पूर्ण देश को एकता एवं समानता के सूत्र में पिरोकर आजादी का सपना पूरा हुओ

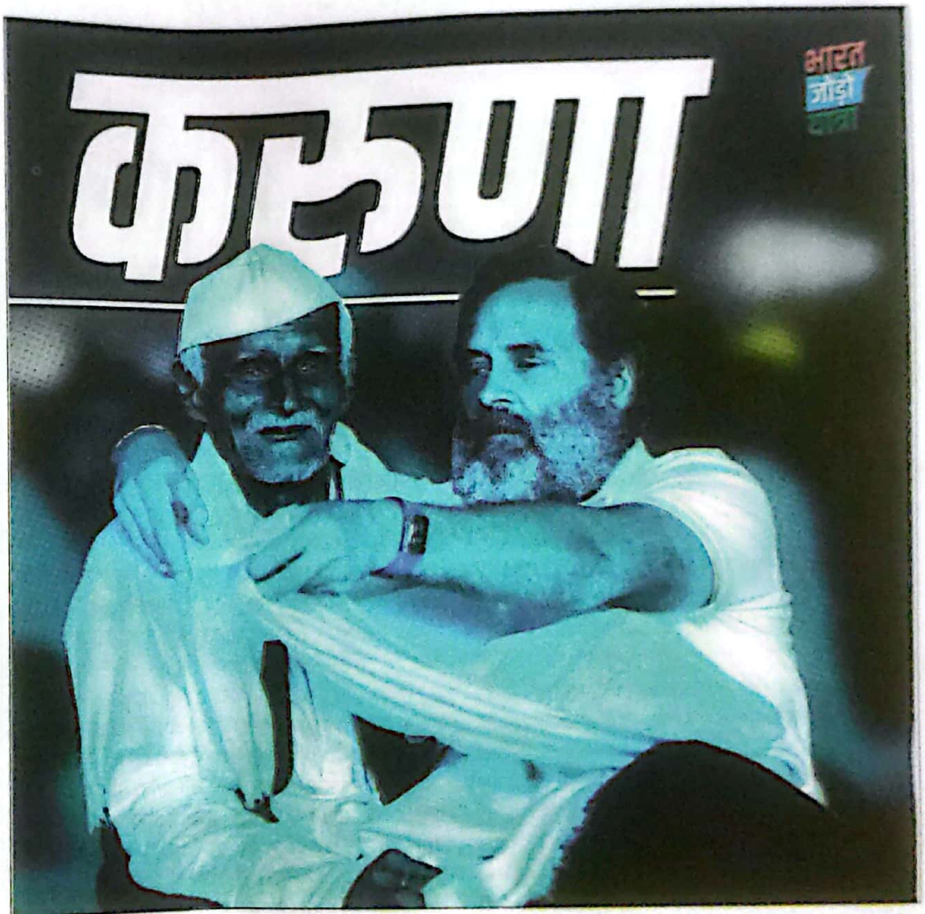

स्वतंत्रता के पश्चात् लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत देशवासियों ने कांग्रेस के हाथों में देश की बागडोर थमाई जनता से मिली जिम्मेदारी के प्रति पूर्ण जवाबदेही निभाते हुए कांग्रेस ने अपनी मूल भावना के अनुरूप देश में जनताशाही की स्थापना के लिए कदम बढ़ाऐ लोकतंत्र की भावना के अनुरूप कार्य करते हुए कांग्रेस ने समाज के सभी वर्गों के हितों को ध्यान में रखकर उल्लेखनीय फैसले किऐ जनता के आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिए बैंकों का राष्ट्रीयकरण; समुचित विकास के लिए योजना आयोग की स्थापना; किसान एवं पशुपालकों की समृद्धि के लिए हरित और श्वेत क्रांति; तकनीकी सशक्तिकरण के लिए आईटी क्रांति; सुगम जीवन एवं व्यापार के लिए टैक्स सुधार अधिनियम; आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उदारीकरण; देश के नौनिहालों के लिए मिड-डे मील एवं आरटीई; पारदर्शिता के लिए आरटीआई; ग्रामीण सशक्तिकरण के लिए नरेगा; महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए महिला आरक्षण बिल; आम भारतीय को खाने का अधिकार; किसान हितों को ध्यान में रखकर भूमि अधिग्रहण बिल इत्यादि कई फैसलों के जरिए देश के सतत एवं समुचित विकास के लिए कांग्रेस के प्रयास जारी रहे

राजनैतिक दृष्टिकोण से वर्तमान समय कांग्रेस पार्टी के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है परन्तु, कांग्रेस के नजरिए से देखने पर यह स्पष्ट होता है कि यह कोई बुरा दौर नही है क्योंकि सत्ता कभी भी कांग्रेस के मूल में नही रही अगर ऐसा होता तो आज देश में लोकतंत्र के बजाय राजतंत्र होता और तमाम राजनैतिक दलों का उदय ही नही हो पातो कांग्रेस के मूल में सदैव भारतीयता रही है; सामाजिक सौहार्द्र रहा है; आम जनता के अधिकार रहे है सत्ता में रहने के दौरान आम जनता से जुड़े कार्य कांग्रेस के केंद्र में रहे वही, सत्ता से दूर रहने की स्थिति में आम जनता के हितों से जुड़े संघर्ष वर्तमान में कांग्रेस के लिए चुनौतियाँ ज्यादा मुश्किल है स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजी साम्राज्य एक विदेशी ताकत के रूप में भारतीय जनता पर अत्याचार कर रहा था और उसका सामना कांग्रेस की मजबूत विचारधारा ने बखूबी किया, जिसका परिणाम आजाद भारत के रूप में सबके सामने है वर्तमान दौर में भी देश की कौटुम्बिक भावना की रक्षा करना ही कांग्रेस पार्टी की प्राथमिकता है भारत देश की एक समृद्ध सांस्कृतिक-सामाजिक परम्परा रही है और इसी परम्परा को निभाते हुए ही गाँ धी जी के सपनों के भारत का निर्माण सम्भव है कुछ बेहतर करने का मार्ग कठिन अवश्य होता है परन्तु, अपने जुनू से कठिन से कठिन कार्य को भी संभव बनाया जा सकता है किसी शायर ने ठीक ही कहा है-

मेरे जुनू का नतीजा जरूर निकलेगा
इसी सियाह समंदर से नूर निकलेगा

ई मोहिउद्दीन खान
महानगर उपाध्यक्ष मुजफ्फरपुर यूथ कांग्रेस

CamScanner

हम कहाँ जा रहे हैं ?

आज

बिहार के हर गांव मुहल्ले मे पूर्व प्रधानमंत्री डा मनमोहन सिंह जी के जमाने का बना बनाया आलीशान विद्यालय भवन है, दुनिया का सबसे विशाल मिड डे मील योजना विद्यालयो मे आज भी लागू है लेकिन अव वो नही है जो विद्यालय मे होना चाहिए था और जो 90 के दशक के पूर्व था, वह है माता सरस्वती की साधना करने और कराने वाले शिक्षक ।विद्यालय मे सबकुछ है पर विद्या नही है ।पौष्टिक आहार खाकर विद्यालय के बच्चो का शरीर तो मजबूत हो रहा पर मस्तिष्क मे तो मानो गोबर भर दिया गया हो ।आश्चर्य तो तब होता है जब बिहार के शिक्षक और अन्य सरकारी कर्मी के बच्चे बिहार सरकार की स्कूलो मे पढते ही नही है बडे नेता और अधिकारी की बात तो दूर मुखिया यहां तक कि वार्ड सदस्य तक का बच्चा बिहार सरकार के स्कूलो मे नही पढता है। यह हाल सिर्फ स्कूलो का नही है,कालेजो की कथा तो और अपरम्पार है ।आनर्स की पढाई के लिए बच्चे नामांकन कराते है तुरंत सीट फूल हो जाता है और सम्वन्धित आनर्स विषय को पढाने वाले शिक्षक ही नही होते हैं कालेजो मे पर परीक्षाएं देर सबेर हो जाती है और रिजल्ट लाजवाब प्रथम स्थान कौन पूछे डिस्टिंक्शन लानेवालो की भरमार होती है ।मै कांग्रेस पार्टी का कट्टर समर्थक और जुझारू कार्यकर्ता हू ,बिहार सरकार मे कांग्रेस की सहभागिता है इसलिए मुझे बिहार की बदतर शिक्षा व्यवस्था पर नही बोलना चाहिए लेकिन किसी पार्टी का कार्यकर्ता और सरकार मे सहभागिता होने के बावजूद मै बिहार का एक सजग नागरिक भी हू और शिकायत अपनो से नही तो किससे करुंगा ? बिहार के माननीय शिक्षा मंत्री विद्वान और शिक्षक भी रहे है ऐसी परिस्थिति मे उनसे बिहार की आम जनता जो काफी गरीब लाचार और बेबस है वह तो सवाल करेगा ही कि उसके बच्चो को शिक्षा कैसे और कहा मिलेगी ? बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है कि आखिर विगत 25-30 वर्षों से शिक्षण संस्थाओ को नष्ट भ्रष्ट करने का प्रयास क्यो किया गया और आज तो पूरी तरह नष्ट ही हो गया है ,आखिर क्यो ?

जहां तक मै समझ रहा हू कि इसके लिए लोगो की सामंती सोच और पूंजीवादी व्यवस्था का बढता वर्चस्व है जो यह चाहता है कि गरीब का बच्चा मजबूत तो हो लेकिन पढे नही ताकि धन्ना सेठो के कल कारखानो बडे बडे सामंती टाइप नेताओ के फार्म हाउस मे मिहनत मजदूरी कर सके ।बिहार के सरकारी शिक्षण संस्थान मजदूर बनानेवाली फैक्ट्री हो गयी है और यही पूंजीवादी व्यवस्था की मांग भी है । गरीब शिक्षित हो गरीब के बच्चे पडे और आगे बडे यह तभी संभव है जब बिहार मे एकबार पुनः कांग्रेस के विचारधारा की मजबूत सरकार नहीं बन जाती है।

बिहार मे जब कांग्रेस की सरकार थी तो याद किजिए 90 के दशक के पूर्व के सारे डाक्टर ,इंजीनियर ,वकील,प्रोफेसर बडे बडे राजनेता सामाजिक कार्यकर्ता बिहार के सरकारी स्कूलो कालेजो से पढे हुए वने ।प्राइवेट स्कूल तो महानगरो आदि मे एकाध हुआ करते थे ।लोग मजदूरी करने महानगरो की ओर नही भागते थे हर गांव शहर कस्बे मे उद्योगो का जाल बिछा था । कांग्रेस की विचारधारा गांधीवादी विचारधारा है और एक वाक्य मे कहे तो " यदि मार्क्सवाद से हिंसा हटा दिया जाय तो गांधीवाद और मार्क्सवाद मे कोई अन्तर नही है।" इसलिए मुझे यह कहने मे कोई संकोच नही है कि बिहार की शिक्षा तबतक नही सुधार सकती है जबतक विचारधारा मे परिवर्तन नही हो जाता है । पूंजीवादी व्यवस्था को मजदूर चाहिए और गांधीवादी व्यवस्था को मालिक चाहिए और मालिक बनाने का पहला शर्त है गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा ।प्रजातंत्र है हर हाल मे निर्णय प्रजा को ही करना है कि आप मजदूर बनाने वाली शिक्षा चाहते है या मालिक बनाने वाली ?

गांधी के विचारों पर चलने वाला योद्धा ही कर सकता है देश को जोड़ने की यात्रा

भारत जोड़ो यात्रा आज 13वें राज्य हिमाचल प्रदेश में प्रवेश कर चुकी है,जहां एक डिग्री सेल्सियस तापमान में हमारे नेता श्री राहुल गांधी जी टी शर्ट में चल रहे हैं,कल 14वें राज्य जम्मू कश्मीर में ये यात्रा प्रवेश कर जाएगी,बस चंद कदम दूर है जब किसी नेता द्वारा विश्व की सबसे लम्बी पद यात्रा का रिकॉर्ड बन जाएगा। अभी तक 12 राज्यों,तमिलनाडु,केरल, कर्नाटक,आंध्र प्रदेश, तेलंगाना,महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश,राजस्थान, दिल्ली,उत्तर प्रदेश, हरियाणा,पंजाब से ये यात्रा गुज़र चुकी है।कभी 42 डिग्री सेल्सियस तापमान तो कभी मूसलाधार बारिश और आज 1 डिग्री सेल्सियस तापमान में शरीर पर केवल टी शर्ट ये सामान्य बात नही है लेकिन राहुल गांधी जी ने देश के किसान मजदूर के हालातों को मास महसूस करने के लिए टी–शर्ट में यात्रा करना मंजूर किया! राहुल जी का मानना है कि जब एक मजदूर किसान सुबह 5:00 बजे अपने खेतों में पानी डालने और उसकी रखवाली करने के लिए ठंड और गर्मी का परवाह किए बिना निकल सकता है तो हम क्यों नहीं? राहुल गांधी जी का संदेश उन सरकारों और राजनेताओं के लिए है जो उनके दुख दर्द को नही समझते और सत्ता हासिल करने के बाद उनकी बदहाली पर छोड़कर ऐसो आराम की जिंदगी गुजर बसर करते हैं! इस दौर के गांधी ने कमाल कर दिया, इमानदारी से कहुं तो ऐसा कोई योद्धा ही कर सकता है।*

-मोहम्मद मोइनुद्दीन
फैसल, प्रदेश महासचिव
बिहार युवा कांग्रेस

कांग्रेस दर्शन ... जन विधान
कार्यालय: सदाकत आश्रम, पटना

शक्ति अंधेरों में रौशनी बन जाती है, बड़ी से बड़ी अड़चनें हटा कर नई राह बना सकती है। हमारे देश की वो ऊर्जा महिलाओं में है। भारत की 21वीं सदी की महिलाओं में वह क्षमता है। इतिहास गवाह है कि हमारे देश के पास सदा ऐसी महिलाओं का नेतृत्व और उनकी ताकत रही है जो समय की धार पर चलकर हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी।

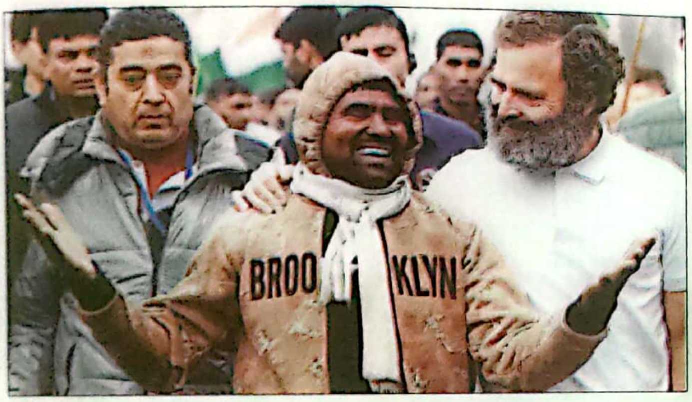

कुछ सालों पहले, 2011 में मुझे झांसी के मैढ़की गांव में रहने और वहां के निवासियों के साथ वक्त बिताने का अवसर मिला था। वहां एक खास मुलाकात मुझे हमेशा याद रहेगी, और वो मुलाकात थी कुंजीलाल जी और उनके परिवार से। उनके घर पर भोजन करने का मौका और कल्पना से परे प्यार और सत्कार मिला था। ऐसे अनुभव आपके जहन में घर कर जाते हैं। आज कुंजीलाल जी के बेटे, लालचंद से यात्रा के दौरान मुलाकात हुई तो पुरानी यादें ताजा हो गईं। प्रतिबद्धता तब भी गरीबों के उत्थान की थी, उनके रोजगार की थी, हर वर्ग के बराबरी के अधिकार की थी, और यह एक निरन्तर चलने वाला संघर्ष है – एक लंबी लड़ाई है। भारत जोड़ो यात्रा इसी संघर्ष को सार्थक रूप देता एक आंदोलन है, जहां हर वर्ग, हर क्षेत्र, हर विचारधारा के लोगों का स्वागत है। कोशिश कीजिए कि हर पूर्वाग्रह को घर छोड़ कर आएं, दिल में बस देश और देशवासियों के लिए प्यार ले कर आएं।

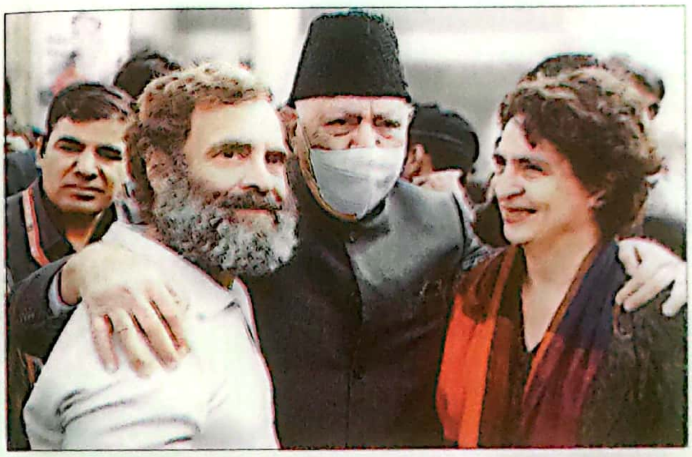

CS CamScanner